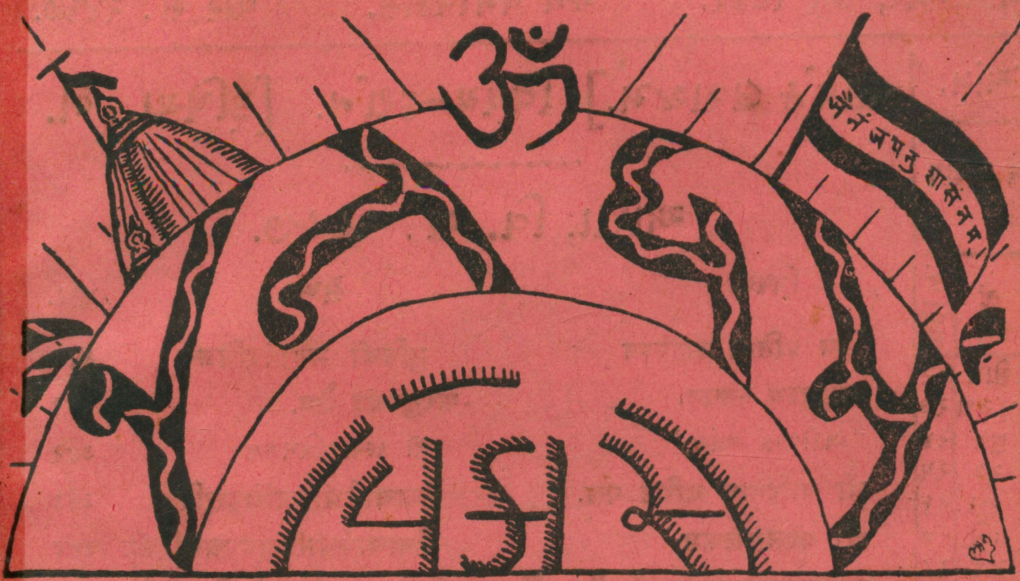

પુસ્તક ૧ લું.] ":આસો : વીર સંવત ૨૪૬૭. [અંક ૧૨

શ્રીમદ્ પન્યાસરત્નવિજયજી મહારાજ.

તંત્રી :

લક્ષ્મીચંદ પ્રેમચંદ શાહ.

પ્રકાશક

ભોગીલાલ સાંકળચંદ શેઠ.

વાર્ષિક લવાજમ.] વિષય-દર્શન. [રૂપિયા, બે.

પંચાંગ.

સુદિ ૧ ક્ષય

તીથિ	વાર	તારીખ
સુ૨	સોમ	૨૨
૩	મંગળ	૨૩
૪	બુધ	૨૪
૫	ગુરૂ	૨૫
૬	શુક્ર	૨૬
૭	શનિ	૨૭
૮	રવિ	૨૮
૯	સોમ	૨૯
૧૦	મંગળ	૩૦
૧૧	બુધ	*૧
૧૨	ગુરૂ	૨
૧૩	શુક્ર	૩
૧૪	શનિ	૪
૧૫	રવિ	૫
વ૧	સોમ	૬
૨	મંગળ	૭
૩	બુધ	૮
૪	ગુરૂ	૯
૫	શુક્ર	૧૦
૬	શનિ	૧૧
૭	રવિ	૧૨
૮	સોમ	૧૩
૯	મંગળ	૧૪
૧૦	બુધ	૧૫
૧૧	ગુરૂ	૧૬
૧૨	શુક્ર	૧૭
૧૩	શનિ	૧૮
૧૪	રવિ	૧૯
૦))	સોમ	૨૦

*અકટોબર ૨૧

આસો, વિ. સં. ૧૯૯૭.

વિષય.	લેખક.	પૃષ્ઠ.
जिन प्रतिमा माहात्म्य	**मुनिश्री भद्रानंदविजय**	૩૪૧
वासुपूज्य स्तवन.	**करतुरचंद जैन.**	૩૪૨
"ગરીબનાં આંસુ"	શ્રી કલ્યાણવિમળજી	૩૪૨
श्री आदिनाथ चरित्र पद्य.	**जैनाचार्यश्रीजयसिंहसूरिजी**	૩૪૩
श्री शीलकुलकम्	**जैनाचार्यश्रीविजयपद्मसूरिजी.**	૩૪૪
शास्त्रसम्मत मानवधर्म और मूर्तिपूजा.	**पूज्य मु. श्री. प्रमोदविजयजी. (पन्नालालजी)**	૩૪૬
શ્રી સિદ્ધચક્રની તાત્વિકભાવના.	જૈનાચાર્ય શ્રીવિજયપદ્મસૂરિજી.	૩૪૯
ધર્મ્ય વિચાર.	ઉપાધ્યાય. શ્રીસિદ્ધિમુનિજી.	૩૫૩
"મૂર્તિપૂજાના વિરોધમાં"	મુનિશ્રી ન્યાયવિજયજી.	૩૫૬
"जीवहिंसा निरोधमें मुनिश्रीकी आदर्श सेवा."	**करतुरचंद जैन.**	૩૫૮
રાધનપુરની વરખડીની પ્રાચીનતા.	લક્ષ્મીચંદ પ્રેમચંદ.	૩૬૦
મૂર્તિપૂજાનો વિકાસ.	સંઘાણી બાપુલાલ કાળીદાસ.	૩૬૫
પાર્શ્વ-પ્રભુ મંગળ દીવો.	સંઘવી અમૃતલાલ ઉજમશી.	૩૬૭
આચાર્યદેવના ઉપદેશથી સંસ્થાઓની ઉદ્ઘાટન.	**ચંદનમલ જૈન.**	૩૬૮
ઉપધાન ફાલ	તંત્રી	૩૬૯
વર્તમાન-સમાચાર	તંત્રી	૩૭૧

શુદિ ૭, શનિ, આયંબિલ ઓળી પ્રારંભદિન.

શુદિ ૧૫, રવિ, આયંબિલ ઓળી સમાપ્તિદિન, અને શ્રી નમિનાથ ચ્યવનદિન.

વદિ ૫, શુક્ર શ્રી સંભવનાથ કેવળદિન, અને રોહિણીદિન.

વદિ ૧૨, શુક્ર, શ્રી પદ્મપ્રભુ જન્મદિન, અને શ્રી નેમિનાથ ચ્યવનદિન.

વદિ ૧૩, શનિ, શ્રી પદ્મપ્રભુ દિક્ષાદિન.

વદિ ૦)), સોમ, શ્રી મહાવીરસ્વામી મોક્ષદિન અને દિવાળી પર્વદિન.

જૈનધર્મ વિકાસ.

પુસ્તક ૧ લું.   આસો, સં. ૧૯૯૭.   અંક ૧૨ મો.

जिनप्रतिमा महात्म्य

(रचयिता-मुनिश्री भद्रानंदविजय सेवाड़ी)

(१)

प्रतिमा महा सुखदायिनी, औ आर्त्तशमनी जान लो।
सब लोक मन आनंदिनी, औ इष्ट फलदा मान लो ॥
फिर कल्पलतिका सम इसे, श्रीशास्त्रकारों ने कहा।
मन ध्यान धर इसका मनुज आनंद पाता है महा ॥

(२)

मूर्त्ति श्री जिनराज की, अद्भुत सुधा की स्यंदिनी।
संसार सागर के तरन हित, नौ समान विनंदिनी ॥
जिन बिंब को जिनवत् समझ, दर्शन करो प्रभुका सदा।
सर्वज्ञता जब तक नहीं, त्यागो न जिनपूजा कदा ॥

(३)

स्वर्गापवर्गप्रदायिनी, औ दुष्ट ध्येय विनाशिनी,
जग जीव मंगलकारिणी, औ आर्त्त जन आधारिणी।
ऐसी अलौकिक गुणवती, तीर्थंकरों की मूर्तियां,
दर्शन करी पावन हुए, जागी हृदय में स्फूर्तियां ॥

(४)

चिंतामणी वत् चिंतितार्थ, प्रदायिका जिन मूर्ति है।
फिर स्मरण पूजन मनन से तो, शीघ्र भव की चूर्ति है ॥
आनंद, आर्द्रकुमार के सद्बोध का कारण यही।
ताते करो तुम भक्ति भद्रानंद पाओगे सही ॥

वासुपूज्य स्तवन

(रचयिता—कस्तूरचंद जैन सेवाड़ी)

देसी—राणीजीतो रजनी सेजा सुतां सजनी ॥

वासुपूज्य स्वामी, तुमे अंतरजामी ।
दरसण देओ सुख थाय थाय थाय ॥
जेठ सुद नम आया, देव विमान पाया ।
जया माता के गर्भे आय आय आय ॥
जया माता जाया, वसुपूज्य घर राया,
चंपानगरी के तुमे राय राय राय ॥
चारित आप पाया, क्रमे सुख पाया ।
मोक्षपुरीना तुमे राय राय राय ॥
पाड़ा लंछन पाया, रक्तवर्णी काया ।
वरक रासी ना तुम्हे राय राय राय ॥
किस्तूरचंद गावे, आपके मंदिर आवे ।
आप दुख कापो सुख थाय थाय थाय ॥

" ગરીબનાં આંસુ "

લેખક:—કલ્યાણવિજયજી

પોકારે ધર્મના ગ્રંથો, ગરીબી છે મહાબુરી,
વાંચો ઈતિહાસના પાને, ગરીબી છે મહાબુરી. [૧]

ગરીબી માન મૂકાવે, ગરીબી ભાન ભૂલાવે,
ગરીબી દેહ વટલાવે, ગરીબી છે મહાબુરી. [૨]

ગરીબી વિષનો વેલી, ગરીબનું કોઈ ના બેલી,
ગરીબની હાય છે બુરી, ગરીબી છે મહાબુરી. [૩]

"ગરીબનાં આંસુ" છે ભેદી, પત્થર પણ નાંખશે છેદી,
ગરીબ સૌ આ જગત્ કેદી, ગરીબી છે મહાબુરી. [૪]

॥ श्री आदिनाथ चरित्र पद्य ॥

(जैनाचार्य जयसिंहसूरिजी तरफथी मळेलुं)

(ગતાંક પૃષ્ઠ ૩૧૧ થી અનુસંધાન)

राजसभामें एक दिन, राजत महाबाराय ।
चतुर मन्त्री आये तभी, बेठे सीस नवाय ॥
स्वयंबुद्ध प्रधान, इमि मनमें बोलन लगा ।
स्वामी कर कल्याण, एसा होना कठिन है ॥

हमरे देखत श्रीमहाराजा, विषय माय बिसरे निज काजा ।
यहि कारण अब नृपहिं जतावें, हानिलाभकर बात सुझावें ॥
स्वयंबुद्ध इमि कह उठ बोला, सभा माहिं हृदय पट खोला ।
नृपति सुनिय एक बात हमारी, सत्य बात मे कहउ विचारी ॥

सागरसे भवउपमा होइ, प्रागर प्रकृति मे कहता सोइ ।
नदी नीर सागर नहीं तृप्ती, तिमि जगमें विषयन नहीं खपती ॥
जिमि जिमि जीव विषयको भोगे, तिमि तृष्णा सद्मातिको चोगे ।
दुर्जन जीव जहरधर प्राणी, इनहिं सेव अति होवत हानी ॥

कामदेवसुख हो तत्काला, पुनि परिणाम विरस रसवाला ।
जिमि खुजातदाद बड़ रोगा, काम बड़त तिमि करते भोगा ॥
कामदेव नर्ककर दूता, व्यसन सिंधु पापका भूता ।
कामदेव शुभ मार्ग छुड़ावे, कामदेव मदमत्त कहावे ॥

ग्रहस्थ भवन जिमि मूशक खोदे, तिमि नरदेह काम सब खोदे ।
अर्थ धर्म मोक्षकर नासा, नर्कपुरीका डालत पासा ॥
कामजाल नारी नृपराई, इससे निजको रहो बचाई ।
संगतिसे नर सुखदुख पावे, संगति हि से मोक्ष सिधावे ॥

चपलूसी नर निज सुखकारी, स्वामी लाभ कर सुरत बिसारी ।
सोइ नर राजन तुमको फांसा, तिन संगति निज कार्यविनासा ॥
विषयवासना है दुखकारी, नर्कगति दुख देवनहारी ।
धर्मविहीन देह नहीं सोभा, जिमि जलहीन सरोवर सोभा ॥

धर्मनिर सुख संपतिशाली, श्रेष्ठ जीव अतिप्रतिभाशाली।
हे स्वामी विद्याधर राया, धर्म करत तुम यह पद पाया ॥
यहि कारण तुम अय नृप राया, गहिये स्वच्छ धर्मकी छाया।
स्वयंबुद्धके बचन सुन, संभिन्नमति गरमाय।
मित्थारूपी अंधको, किया सभाके माय ॥
अरे स्वयंबुद्ध तुम चतुराइ, स्वामिहितयुत बुद्धि उपाइ ॥
होडकार जिमि जते अहारा, तिमि तुम बचन ज्ञान उजियारा।
सरल प्रसन्न रहत हम स्वामी, तिन मंत्री तुम सम अनुगामी ॥
किन कठोर गुरु विद्या दीनी, असमयमें यहि विधि मति कीनी।
निज सुखहित सेवक कर सेवा, स्वामी सुखकर वरजत केवा ॥
निजसुख छांड़ी मोक्षगति चावा, ते मतिमंद भ्रमत दुख पावा।
अधर्म धर्म नहीं करहु विचारा, सुखमें इससे होत अंधारा ॥
बहुविधि खंडन करत अभागा, अमृत छाड़ि जहर संगलागा।
स्वयंबुद्ध बोला तभी, सुनकर खंडन बेन।
धर्मद्रोहसंगत सदा, नर्कगति दुख देन ॥
सुनहु सभिन्नमति चितलाई, धर्म किये सुख आवत भाई ॥
राज भवन कोइ अति सुख भागे। कोइ नर मारग कनुका चोगे।
ज्ञानचक्षु देखो तुम ज्ञानी, पाप पुन्य कर होय पिछानी ॥
सुख चाहत दुख हे अति भारी, धर्मवान सुखकर अधिकारी।
असमय समय सुकर्म न देखा, क्षण २ का सब रखना लेखा ॥
चतुर सेवक स्वामीसुख चाहे, निज सुख कर्म अधीन फसा हे।

अपूर्ण

॥ श्री शीलकुलकम् ॥

कर्ता—जैनाचार्य श्रीपद्मसूरिजी.

(ગતાંક પૃષ્ઠ ૩૧૨ થી અનુસંધાન)

॥ आर्यावृत्तम् ॥

चोरंते तेण समा, णाणाइधणं पि पंचविहविसया।
इह सेट्ठी दिट्ठंतो, सोअव्वो भव्वजीएहिं ॥२०॥
सव्वधणं गिण्हित्ता, चोरा पगया तहावि गिहसामी।
जाणामित्ति कहेए, णायं णायं मुहा णायं ॥२१॥

अब्भासो हे जीवे !–पावविहाणस्स तुज्झ बहु समया ।
पडिआ तण्हाए तं, परिकड्ढसु चित्तओ सम्मं ॥२२॥

॥ शार्दूल विक्रीडितवृत्तम् ॥

तुट्ठो होइ ण सायरो जलसमूहेहिं नईणं जहा,
दव्वेहिं किवणो जहेव वडवग्गी सायरेहिं जहा ।
धण्णेहिं दुहभस्सगामयणरो कट्ठेहि विस्साणरो,
भोगेहिं ण भवी तओ हियअरो तस्संगचाओ सया ॥२३॥

रयणीतुल्ला तण्हा, रागाइतिमिरविवड्ढिणी तीए ।
जीवो करेइ पउरं, पावं भोगेहि सम्मइ किं ? ॥२४॥
जलगयचंदेण जहा–नियकज्जं सिज्झए ण कइयावि ।
भद्दं भोगेहि तहा, ण होज्ज कइयावि केसिंपि ॥२५॥

इट्ठं काउं तण्हं, भमए मोही ण पावए संतिं ।
दीणो जाओ तीए, अप्पा तुहऽणंतसत्तीवि ॥२६॥
रोयइ धम्मियकज्जं. णो तुह संसारिणी भवसमुद्दे ।
तण्हत्ति वियारित्ता, कड्ढित्ता देहगेहाओ ॥२७॥

करइ मणं साहीणं, जे भव्वा ते लहंति णो दुक्खं ।
कयबंधणपरिहारा, णीचं मोअंति सिद्धीए ॥२८॥
वंदणरिहा वितण्हा, तण्हाहीणा जणेहिं णिंदरिहा ।
अणुकूलत्तं तीए, देइ दुहं गइचउक्कम्मि ॥२९॥

पडिकूलया पदेए, सासयसुहमुत्तमं थिरं पुण्णं ।
विण्णा लहंति बोहं, संखित्तेसुं पि वयणेसुं ॥३०॥
सारो त्ति भवो तीए, मण्णइ तव्विरहकालसमयम्मि ।
ण तहत्ति सावहाणो, होज्जा णिव्वाणमग्गम्मि ॥३१॥

तण्हाइ वइरेगे, सारा मुत्ति त्ति गणइ भेअण्णो ।
तीए बहु प्पणट्ठं, हे जीव ? हिअरओ होज्जा ॥३२॥

अपूर्ण

शास्त्रसम्मत मानवधर्म और मूर्तिपूजा

(लेखक)—पूज्य मु, श्री. प्रमोदविजयजी म. (पन्नालालजी)

(ગતાંક. પૃષ્ઠ ૩૧૪ થી અનુસંધાન)

प्रकृति का प्रत्येक पदार्थ भी धर्म प्रवृत्ति की ही नसीहत देता है। नदियों, वृक्षो और बादलें और ही दृष्टि निपात कीजिये ये स्वयं धर्मार्थ ही अपना जीवन सर्वस्व अर्पण किये हुए रहते हैं। स्वार्थ के वशीभूत बन कर जो धर्म प्रवृत्ति की जाय वह इतनी श्रेयस्कारी नहीं हो सकती जितनी कि-परमार्थ वृत्ति होती है। कवियों ने भी कहा है किः-

पिबंति नद्यः स्वयमेव नाम्भः, स्वयं न खादन्ति फलानि वृक्षाः।
नादन्ति सस्यं खलु वारिवाहाः, एकान्तधर्माय सतां विभूतयः॥

अर्थात् नदियां स्वयं अपना पानी आप नहीं पीती हैं, वृक्ष स्वयं अपने फल आप नहीं खाते हैं, बादल स्वयं अनाज नहीं खाते हैं किंतु धर्म के लिये वे सब अपना जीवन अर्पण कर देते हैं, कारण परमार्थियों की विभूति धर्म के लिये ही होती है, वे धर्म निमित्त सर्वस्व अर्पण करने में ही जीवन की सफलता समझते है।

शास्त्रकारों ने तो प्रमाद को त्याग कर आत्मकल्याण हेतु प्रवृत्ति करते रहने का स्थान २ पर उपदेश और आदेश दिया है। गौतमस्वामी को महावीर का जो खास संदेश था वह भी यही था कि-"समयं गोयम! मा पमायए" एक क्षणभर भी धर्म प्रवृत्ति में प्रमाद न करो। कल के विश्वास पर या भविष्य के विचार पर न रहो, कारण भविष्य का निश्चय और विश्वास वही कर सकता है जिसकी मृत्यु के साथ मैत्री हो। यदि मैत्री नहीं है तो उसका विश्वास भी नहीं करना चाहिये। कहा भी है किः—

जस्सऽत्थि मच्चुणा सक्खं, जस्स वऽत्थि पलायणं।
जो जाणइ न मरिस्सामि, सो हु कंखे सुए सिया॥

अर्थात् भविष्य का आधार उसी को लेना चाहिये जिसका मृत्यु के साथ सख्यभाव हो, जो मृत्यु के पास आने पर उससे अपना पिण्ड छुड़ा कर भाग सकता हो अथवा जिसको यह दृढ विश्वास हो गया हो कि मैं अमुक समय के पूर्व कदापि न मर सकूंगा। देखो जब इक्षुकार राजा ने अपने दोनों पुत्रों को धर्म विचलित करने के लिये विविध प्रलोभनों का आलंबन ग्रहण किया तथापि उन पुत्रों ने अपने पिताको भी उपरोक्त साहस पूर्ण प्रत्युत्तर ही दिया और बतलाया कि-पिताजी! जिस मनुष्य का रात्रि दिवस धर्म करते हुए व्यतीत होता रहता है उसका वह रातदिन सफल ही मानना चाहिये।

इसके विपरीत जिसका रात्रि दिवस अधर्म प्रवृत्ति में बीत जाता है उसका सारा जीवन बर्बाद ही समझना चाहिये। कारण जीवन का सार धर्म है। प्रथम तो अल्प काल का जीवन और द्वितीय अधर्म प्रवृत्ति फिर क्या आत्म हानि की कम संभावना है? अरे! ऐसे समय तो निश्चित ही आत्म पतन समझना चाहिये। कहा भी है कि:—

जा जा वच्चइ रयणी, न सा पडिनियत्तई।
अहम्मं कुणमाणस्स; अफला जंति राइओ॥
जा जा वच्चइ रमणी, न सा पडिनियत्तई॥
धम्मं च कुणमाणस्स, सफला जंति राईओ॥

जीवन की सफलता और निष्फलता सूचित करनेवाली ये दो गाथाएं हैं, इन दोनों में जीवन के विकास, प्रकाश, अभ्युदय और अधःपतन के तत्व सन्निहित हैं। यदि द्वितीय गाथा को अपने जीवनमंत्र की उपमा दी जाय तो कोई अत्युक्ति न होगी। महावीर प्रभु का स्फुट सिद्धान्त सार इन दोनो गाथाओंमें ही हैं।

संसार में जितने भी मज़हब, संप्रदाय, पंथ और शास्त्र हैं उनके निर्माण का उद्देश्य केवल नीति, धर्म और कर्त्तव्य मार्गका ज्ञान कराने का ही है। जब तक अपने कर्तव्य को नहीं पहिचानते हैं तभी तक विरक्ति की अभिलाषा जागृत नहीं होती है और ज्योंही कर्त्तव्य भान हुआ त्योंही इन बंधनकारी बंधनो से मुक्त होने की तीव्राभिलाषा हृदय में घर कर लेती है। बंधनों से विरक्ति भावों की उत्पति होना ही धर्मलाभ और जीवन साफल्य के संस्कारों से संस्कारित होना है।

जब हम अपने स्वार्थ के वशीभूत होकर या अन्य किसी अभिप्राय विशेष से प्रेरणा प्राप्त कर समीपवर्ती ग्रामों में जाते हैं तो वहां भी मार्गव्यय और खाद्य सामग्री साथमें ले जाते हैं, जिससे भूख प्यास (क्षुधा पिपासा) का परीषह समय पर नहीं सहन करना पड़ता है। मार्गव्यय साथ इसी लिये लिया जाता है कि आगे पराधीन बनकर दूसरों के मुख की ओर न ताकना पडे। इसके विपरीत जिसके पास मार्गव्यय तथा खाद्य सामग्री आदि कुछ भी नहीं हैं और मुसाफिरी के लिये निकला है उसको भविष्यमें कितनी आपत्तियों एवं तिरस्कारों का सामना करना पड़ता है इसकी साक्षी स्वयं उसका दरिद्रतामय जीवन ही दे रहा हैं। उसे पद पद पर भूख प्यास सताती है, स्थान २ पर रुकना पडता है, द्वार २ पर हाथ पसारने पडते हैं और घर २ में भीख मांगनी पडती है। यदि वह पहिले से ही अपने साथमें मार्ग का सुप्रबंध कर लेता तो उसकी यह विचारणीय और दुःखद परिस्थिति कदापि नहीं होती। वास्ते जैसे किंचित् दूर जाने के लिये भी प्रबंध की अवश्य आवश्यकता रहती है उसी प्रकार मोक्षरूप विशाल और अत्यन्त दूरवर्ती स्थान पर पहुंचने के लिये भी

धर्मरूप मार्गव्यय की आवश्यकता है। अरे! संसारमें तो अनेक ऐसे अनुग्रह दृष्टिवाले श्रीमंत सज्जनगण विद्यमान हैं जिनसे याचना करने पर अपनी स्वार्थ पूर्ति हो सकती है किंतु परलोकमें तो इस प्रकार अनुकम्पा करनेवाला कोइ नहीं मिलेगा। संसार में तो दूर २ का परिचय, संबंध और नाता निकालकर उदरभरण कर भी सकते है किंतु परभवमें ऐसा कोइ परिचित ज्ञातिजन न मिलेगा जिसकी तुम्हारे पर अनुग्रहदृष्टि हो जाय। वहां तो अपनी जेब खर्ची से ही काम चलेगा। यदि जेब खर्ची पूर्ण नहीं है तो मार्ग के बीचमें ही उतरना पडेगा और विविध यातनाएं सहनी पड़ेगी कहा भी है कि:—

अद्धाणं जो महंतं तु, अपाहेओ पवज्जइ।
गछंते से दुही हुई, छुहातण्हाहिं पीड़िए॥
एवं धम्मं अकाऊणं, जो गच्छइ परं भवं।
गच्छंते से दुही होई, वाहीरोगेहिं पीडीए॥

यह तो अपाथेय (शम्बल, मार्गखर्च रहित) मुसाफिरी की उपमा देकर अधर्म के परिणाम का प्रतिपादन किया साथ ही धर्मरूपी पाथेय ले कर मुसाफिरी करने वाले को कितनी सुविधा, कितना आनन्द और कितना हर्ष होता है सो भी बताते हुए कहते है कि:—

अद्धाणं जो महंतं तु, सपाहेओ पवज्जइ।
गच्छंते से सुही होई, छुहातण्हाविवज्जिओ॥
एवं धम्मं पि काउणं जो गच्छइ परं भवं।
गच्छंते से सुही होई, अप्पकम्मे अवेयणे

पर भव में कोई चाची, नानी और मामी का घर नहीं जो कि जीव का आतिथ्य सत्कार करे। यदि मान पूजा और प्रतिष्ठा की कामना है तो धर्मरूपी जेब खर्ची साथ में ले जाओ इससे किसी की भी तुम्हारे पर प्रहार करने की हिम्मत नहीं होगी। जिसने इस तत्व रत्न को पहिचान लिया उसने सब को जान लिया है "जे एगं जाणइ से सव्वं जाणइ" का सारांश भी यही है कि जिसने आत्मतत्व का यथार्थरूप में अवलोकन कर लिया उसने सकल तत्वोंका अध्ययन कर लिया है। धर्मतत्व आत्मतत्व से भिन्न नहीं है वह तद्रूप ही है।

लिंगभेद उसकी बाह्य वृत्ति का ही सूचक है। लिंग कोइ आत्मकल्याण का साधकतम (उपादान) कारण नहीं है। लोकप्रतीति के निमित्त ही लिंग की आवश्यकता बतलाइ हैं वास्तव में आत्मकल्याण तो ज्ञान दर्शन और चारित्र से ही संबंध रखता है। ज्ञान दर्शन और चारित्र धर्मका विकास भी आभ्यंतर सद्प्रवृत्ति से ही हो सकता है। वेदोपनिषद् में भी कहा है कि:—

શ્રી સિદ્ધચક્રની તાત્ત્વિકભાવના

લેખક. વિજયપદ્મસૂરિ

(ગતાંક પૃષ્ઠ ૩૧૮ થી અનુસંધાન)

આ ત્રણ પ્રકારની આરાધનાઓમાં છેલ્લી બે આરાધના ત્યાગ કરવા લાયક છે. કારણ કે તે બંને મોક્ષ સુખને આપવાને અસમર્થ છે. એ પ્રમાણે આરાધનાના ભેદો સમજી નવપદમય શ્રીસિદ્ધચક્રની સાત્ત્વિકી આરાધના કરવાના અભિલાષિ જીવોએ નવપદોના યથાર્થ સ્વરૂપને અવશ્ય જાણવું જોઇયે. તેથી હવે નવપદમય શ્રીસિદ્ધચક્રનું સ્વરૂપ કહીયે છીયે. તેમાં પહેલું અરિહંત પદ છે, માટે તેનું સ્વરૂપ દર્શાવવામાં આવે છે.

૧. અરિહંતપદ–નવપદમય શ્રી સિદ્ધચક્રમાં પ્રથમપદે જણાવેલા શ્રી અરિહંત પ્રભુના સ્વરૂપને જણાવવાના જોકે અનેક પ્રકારો શાસ્ત્રમાં બતાવેલા છે તોપણ તેઓમાં સરલ પ્રકાર આ છે–અહીં આરાધનાનો પ્રસંગ હોવાથી જે પ્રભુની ધ્યાનાદિ સાધનદ્વારા આપણે આરાધના કરવાની છે, તે પ્રભુ વર્તમાન સ્વરૂપમાં એટલે ભાવ નિક્ષેપાની વિચારણાએ કેવા સ્વરૂપે વર્તે છે–એ બીના–"**વિવિધ ગુણોને દેખાડનારા અર્હન્ વિગેરે ૮ નામોને વિસ્તારથી જણાવવાના પ્રસંગે**" જણાવી, તેવી સ્થિતિ પ્રભુએ કયા ક્રમે પ્રાપ્ત કરી ? એ પણ જણાવી, છેવટે તે સ્વરૂપને મેળવવા માટે આપણી હાર્દિક ભાવના કેવા પ્રકારની હોવી જોઇયે, આ બાબત પણ ટુંકામાં કહેવાશે– અરિહંત પ્રભુના ૮ નામો આ પ્રમાણે જાણવા ૧ અર્હન્ ૨ અરહોન્ત ૩ અરથાન્ત ૪ અરહંત ૫ અરહયન્ ૬ અરિહંત ૭ અરૂહંત ૮ નમોઽર્હં. આ આઠ નામોનું અનુક્રમે સ્વરૂપ આ પ્રમાણે જાણવું. ૧ અર્હન્=અશોકવૃક્ષ સુર પુષ્પવૃષ્ટિ દિવ્યધ્વનિ વિગેરે સ્વરૂપે ઇન્દ્રાદિ દેવોથી કરાતી પૂજાને લાયક જે હોય એટલે ઇન્દ્રાદિ દેવો આઠ મહા પ્રાતિહાર્યોએ કરી જેમની પૂજા કરે, તે અર્હન્ કહેવાય. વિશેષાવશ્યકમાં કહ્યું પણ છે કે–**अरिहंति वंदणनमंसणाणि अरिहंति पूयसक्कारं ॥ सिद्धिगमणं च अरहा, अरहंता तेण वुच्चन्ति ॥ १ ॥** જો કે સ્થાનાંગ સૂત્રમાં અપેક્ષાથી ૧ **अवधिअर्हन्** ૨ **मनःपर्यवार्हन्** ૩ **केवलज्ञानार्हन्** ॥ આ ત્રણ પ્રકારે અર્હન્ બતાવ્યા છે. તો પણ ઉપર કહેલું સ્વરૂપ પહેલા બે અર્હન્માં નહિ ઘટતું હોવાથી નવપદની આરાધનામાં ત્રીજા અર્હન્નો અધિકાર છે, એમ સમજવું. ॥ ૨ અરહોન્ત પ્રભુ પોતે સર્વજ્ઞ હોવાથી શૂન્ય પ્રદેશમાં પણ બનેલી સર્વ બીના અથવા તો ભયંકર અંધકારમય પર્વતની ગુફા વિગેરે સ્થલે પણ બનેલી તમામ બીનાને કેવલજ્ઞાનથી જાણે છે. માટે અરહોઽન્ત પણ કહી શકાય ॥ ૩ અરથાન્ત–પ્રભુએ રથ વિગેરે

પરિગ્રહનો અને જરાદિનો નાશ કરેલો હોવાથી અરથાન્ત કહેવાય ॥ ૪ અરહંત–પ્રભુએ રાગાદિનો ક્ષય કરેલો હોવાથી કોઇપણુ ઇષ્ટ અને અનિષ્ટ વસ્તુમાં ક્રમે કરી આસક્તિ (તીવ્ર પ્રેમ) અને દ્વેષ નહિ કરતા હોવાથી અરહંત પણુ કહી શકાય ॥ ૫ અરહયન્– અત્યંત મનોહર એવા સમવસરણુમાં બેસી પ્રભુજી દેશના આપે છે, છતાં તેમને મણિ રત્નાદિની ઉપર બીલકુલ મમતા હોતી નથી તથા અનુકૂલ અને પ્રતિકૂલ એમ બંને રીતે ઉપસર્ગ કરનારની ઉપર અનુક્રમે રાગ અને દ્વેષ નહિ હોવાથી અરહયન્ પણુ કહી શકાય ॥ ૬ અરિહંત–સાચા અને કટ્ટા શત્રુઓ જે રાગ દ્વેષ વિગેરે, તેમનો નાશ કરેલો હોવાથી પ્રભુને અરિહંત પણુ કહી શકાય. કહ્યું પણુ છે કે–**अट्ठविहं पिय कम्मं,अरिभूयं होइ सयलजीवाणं ॥ तं कम्ममरिं हंता, अरिहंता तेण वुच्चंति ॥१॥** ૭

અરૂહંત=જેમ બીજ (બી) નો નાશ થયા પછી અંકુરો ન ઉગે, તેવી રીતે પ્રભુએ કર્મરૂપિ બીજનો નાશ કરેલ હોવાથી હવે તેમને સિદ્ધસ્થાને ગયા પછી ફરી જન્મ ધારણુ કરવાનો નથી. માટે અરૂહંત પણુ કહી શકાય. ॥ કહ્યું પણુ છે કે **॥ दग्धे बीजे यथाऽत्यन्तं, प्रादुर्भवति नांकुरः ॥ कर्मबीजे तथा दग्धे न रोहति भवांकुरः ॥१॥** ૮ નમોऽર્હં=પ્રભુજી–રાગદ્વેષ કષાય પાંચ ઇન્દ્રિયો અને બાવીશ પરિષહોને તથા ઉપસર્ગોને પોતાના નોકર જેવા બનાવે છે=રાગ દ્વેષાદિને આધીન થતા નથી માટે નમોऽર્હં કહેવાય. ॥ કહ્યું છે કે–**रागद्दोसकसाए य, इंदियाणि य पंचवि परीसहे ॥ उवसग्गेनामयं ता, नमोऽरिहा तेण वुच्चंति ॥१॥**

ઉપર જણુવેલા ગુણોને અરિહંત મહારાજા ધારણુ કરનાર હોવાથી સાતમા અંગમાં તેઓશ્રીને પાંચ ઉપમાઓ દ્વારા ઓળખાવ્યા છે. તે પાંચ ઉપમાઓ આ પ્રમાણે જાણુવી ॥ ૧ મહામાહન–પ્રભુજીએ મનથી, વચનથી અને કાયાથી જીવહિંસા નહિ કરવાની, નહિ કરાવવાની, નહિ અનુમોદવાની પ્રતિજ્ઞા કરેલી હોવાથી અને દેશનામાં પણુ હે ભવ્યજીવો તમે કોઇપણુ પ્રાણિને ન હણુશો ન હણુશો કારણુ કે જેવા તમને તમારા પ્રાણો વહાલા છે, તેવા તે જીવોને એટલે જેઓને તમે હણુવા ચાહો છો, તેમને પણુ પોતાના પ્રાણો વહાલા છે. વિષ્ટામાં રહેલો કીડો પણુ મરણુને ચાહતો નથી. તેને અને ઇન્દ્ર વિગેરે તમામ જીવોને જીવવાની આશા સરખી છે. આવો ઉપદેશ આપતા હોવાથી પ્રભુને મહામાહન કીધા છે. વળી આ પ્રભુ પોતાના કટ્ટા શત્રુનું પણુ અનિષ્ટ ચાહતા નથી. જુઓ ગોશાલાએ પ્રભુદેવ મહાવીર મહારાજાની ઉપર તેજોલેશ્યા મૂકી. અનંતબલિ પ્રભુએ તેનું લગાર માત્ર પણુ ખરાબ કર્યું નથી પરમાત્માની આ વૃત્તિ આપણુને શિખામણુ આપે છે કે મારી માફક જ્યારે તમે પણુ જો અપકારિનું પણુ ભલું ચાહશો ત્યારે જ તમારૂં કલ્યાણુ થશે. માટે જ પ્રભુને માહન એમ ન કહેતા મહા

મોહન કીધા. ॥ મહાગોપ-ગોપ=ગાય વિગેરે પશુઓનો સાચવનાર. અરિહંત પ્રભુમાં તે ગોવાળ કરતાં શિષ્ટ ગુણો રહેલા હોવાથી મહાગોપ કહેવાય. એટલે પરમાત્મા છ જીવનિકાય રૂપ પશુઓનું રક્ષણ કરવામાં અતિ કુશલ હોવાથી મહાગોપ કહેવાય. જેમ ગોવાળ લાકડી હાથમાં રાખીને ગાય વિગેરે પશુઓને સર્પ, વાઘ વિગેરે હિંસક પ્રાણિયોના ભયથી બચાવે છે, અને જ્યાં ઘણું ઘાસ તથા પાણી હોય, તેવા વનમાં લઇ જાય છે, તેમ અરિહંત પ્રભુ પણ ધર્મ રૂપિ લાકડી હાથમાં રાખી સંસારિ જીવો રૂપ પશુઓને દેશનાદ્વારા મરણાદિ ભયથી બચાવી નિર્વાણ રૂપિ ઉત્તમ શાંતિના આપનાર વનમાં લઈ જાય છે. આવા ઉત્તમ ગુણને લઇને અરિહંત પ્રભુ મહાગોપ કહેવાય. જુઓ શાસ્ત્રીય પુરાવો વિશેષાવશ્યકમાં-**छक्कायररक्खणट्ठा, महागोवा तेण वुच्चन्ति** ॥ બીજો પણ પુરાવો મલયગિરિ મહારાજે કરેલી આવશ્યક વૃત્તિમાં પણ તેજ પ્રમાણે-**पालेंति जहा गावो गोवा अहिसावयाइ दुग्गेहिं ॥ पउरघणपाणियाणि य, वणाणि पावेंति तह चेव ॥१॥ जीवनिजाया गावो जं ते पालेंति ते महागोवा ॥ मरणाइभएहिं जिणा, निव्वाणवणं च पावेंति ॥ २**

સાર્થવાહ-જે વિવિધ પ્રકારના કરિયાણાઓ લઈને વિશેષ લાભને માટે બીજે દેશ જાય, અને રાજમાન્ય, તથા પ્રસિદ્ધ વ્હેપારી હોય, દીન, અનાથની રસ્તામાં ખબર લેનાર-એવો જે સાર્થ-સમુદાયનો રક્ષક-તેનું નામ સાર્થવાહ. જેમ તે સાર્થવાહ કરિયાણું લઈ બીજે દેશ જતાં પોતાની સાથેના સમુદાયનું યોગક્ષેમ કરવા પૂર્વક (જે વસ્તુની ખામી હોય તે આપે તેનું નામ યોગ, અને છતી વસ્તુની રક્ષા કરવી તે ક્ષેમ) રક્ષણ કરે છે, એટલે-માર્ગના અજાણપણાને લઇને ભૂલા પડી અવળે રસ્તે જઈ ગભરાટમાં પડેલા સાથેના માણસોને ખરો રસ્તો સમજાવી સીધે માર્ગે લાવી દુઃખથી મુક્ત કરી આશ્વાસન આપી ઇષ્ટ નગરમાં લઇ જાય, તેવી રીતે અરિહંત મહારાજા જે જીવો સમ્યગ્દર્શન વિગેરે ન પામ્યા હોય તેઓને સમ્યગ્દર્શન વિગેરે પમાડે છે. (આનું નામ-યોગ કહેવાય.) અને જે જીવો સમ્યગ્દર્શન વિગેરેની આરાધના કરી રહ્યા છે તે જીવોના જેનાથી સમ્યગ્દર્શનાદિ મલીન ન થાય, અથવા મૂલમાંથી નાશ ન પામે, એવા સાધનો બતાવે છે. (આનું નામ-ક્ષેમ કહેવાય) એટલે-બીન સમજણને લઇને સન્માર્ગને ભૂલી મિથ્યાત્વિઓના અવળે માર્ગે જઈ ગભરાયેલા જીવોને જ્ઞાનરૂપિ નેત્ર આપી ખરો સમ્યગ્દર્શનાદિરૂપ મુક્તિનો માર્ગ સમજાવી તે માર્ગમાં જોડી સમ્યગ્દર્શન વિગેરેને સાચવવાના ઉપાયો સમજાવી કર્મની પીડાથી મુક્ત કરી મોક્ષરૂપિ ઈષ્ટનગરમાં પહોંચાડે છે. માટે સાર્થવાહ કહેવાય. ॥ ૪-ધર્મકથી-મિથ્યાત્વના જોરથી ઉન્માર્ગને સેવી રહેલા જીવોને સાતિશય મધુર વાણીથી મિથ્યાત્વના જોરને ઘટાડવાના ઉપાયો સમજાવી, ઉન્માર્ગના સેવનથી થતો ગેરલાભ સમજાવી સમ્યગ્દ-

ર્શનાદિરૂપ મોક્ષમાર્ગમાં જોડી સંસારની પીડાથી મુક્ત કરે છે, માટે ધર્મકથી કહેવાય. ॥ ૫-નિર્યામક-ખલાસીનું બીજું નામ નિર્યામક છે. જેમ ખલાસી વહાણમાં બેઠેલા તમામ જીવોને કોઇપણ જાતની ઇજા ન થાય તેવી રીતે સીધે રસ્તે સમુદ્રનો પાર પમાડે છે, તેવી રીતે અરિહંતપ્રભુ પણ ધર્મરૂપી વહાણમાં બેઠેલા ભવ્ય જીવોને નિર્વિઘ્નપણે સંસારરૂપિ સમુદ્રનો પાર પમાડે છે, માટે નિર્યામક કહેવાય. જુઓ આવશ્યક ટીકામાં-**पावेंति जहा पारं, सम्मं निज्जामगा स मुद्दस्स ॥ भवजलहिस्स जिणिंदा, तहेव जम्हा अतो अरिहा ॥१॥** ભવજલધિ એટલે જેમાં મનુષ્યાદિરૂપે જીવો ઉત્પન્ન થાય તે ભવ. તેમાં જન્મ જરા મરણરૂપ પાણિનો ધોધ-પ્રવાહ વહેતો હોવાથી ભવને-સંસારને સમુદ્રની ઉપમા આપી છે. આ સંસારસમુદ્રના પાર પમાડનારા ભાવનિર્યામક એવા અરિહંત મહારાજાના શ્રી સમવાયાંગસૂત્રના ૩૪ મા સમવાયમાં ચોત્રીશ અતિશયો કહ્યા છે. જેઓમાં ૪ અતિશયો મૂલથી-જન્મથી માંડીને હોય છે.

અપુર્ણ

પૃથ્વીચંદ્ર અને ગુણસાગર

યાને

એકવીસ ભવનો સ્નેહસંબંધ

[મૂલકર્તા : રૂપવિજયજી ગણિ]

અનેક અન્તર્ગત કથાઓથી ભરપૂર, વૈરાગ્યમય છતાં વાંચવામાં રસ ઉત્પન્ન કરે તેવો આ ગ્રંથ હરેક જૈન-જૈનેતરે અવશ્ય વાંચવા તેમજ મનન કરવા યોગ્ય છે.

ક્રાઉન સોલ પેજી સાઇઝમાં, હોલેન્ડના ગ્લેજ કાગળ ઉપર સુંદર છપાઈ તથા આકર્ષક બાઇન્ડીંગ ફરમા લગભગ ૪૦ છતાં કીંમત માત્ર રૂપિયા ત્રણ.

—મળવાનાં સ્થળ—

૧ મહેતા નાગરદાસ પ્રાગજીભાઇ
દોશીવાડાની પોળ,
અમદાવાદ.

૨ સંઘવી મુલજીભાઈ ઝવેરચંદ
પાલીતાણા.

૩ મેઘરાજ જૈન પુસ્તક ભંડાર
પાયધુની-મુંબઈ.

૪ જૈનધર્મપ્રસારક સભા
ભાવનગર.

૫ મોહનલાલ રૂગનાથ
પાલીતાણા.

ધર્મ વિચાર

(લેખકઃ ઉપાધ્યાય શ્રી સિદ્ધિમુનિજી)

(ગતાંક પૃષ્ઠ ૩૨૨ થી અનુસંધાન.)

આ વિધવાઓનો વર્ગ પણ મોટો છે અને તેમાં અનુચિત પ્રવૃત્તિઓ કોઈ વખતે નજરે પડે છે તેથી, 'ગામ હોય ત્યાં ઢેઢવાડો પણ હોય' એ વાત પર ધ્યાન નહિ આપનારા અને અમુક સંખ્યાની વિધવાઓનો દોષ તેમના આખા વર્ગ પર ઢોળવા ઇચ્છનારા જે લોકો છે, તેમને ઉપરોક્ત અનીતિનો એકાદો પ્રસંગ હાથ લાગી જતાં, ફાવે તેમ બોલવાની-બકવાની તક આ વિધવાઓમાં જ વધારે; પણ આથી સામાન્ય વિધવાઓને પુનર્લગ્નના રસ્તે પગ મુકવાનો ઉત્સાહ જાગે કે તેમનાં લાગતાંવળગતાંઓ બ્રહ્મચર્યની કીમ્મત ન સમજતાં તેઓને તેવા રસ્તે જવા પ્રેરે, પરંતુ એવી કોઈપણ જાતની હીલચાલ આ આર્યદેશને બીલકુલ ઇષ્ટ નથી. એવી હીલચાલ ઉચ્ચ સમાજોને માટે હળહળતા ઝેર સમાન છે.

વળી વિધવાઓમાં પુનર્લગ્નની ભાવના પૂરજોસથી ફેલાવનારાઓ કન્યાઓની શી દશા થશે એનો ખ્યાલ ભાગ્યે જ કરતા જોવામાં આવે છે. આજે જે સમાજને માટે પુનર્લગ્નની વાતો કરવામાં આવે છે ત્યાં, કોઇપણ કુંવારો નહિ રહે કે વિધવાઓ કુંવારાને નહિ જ વરે-ઝડપી લે એ કેટલું શક્ય છે? અહિં પુરૂષે સ્રીનું પોષણ કરવું જોઇએ એ પણ એક સવાલ છે. કન્યાઓ પુખ્ત-વધારે પુખ્ત વયની કરવામાં આવે છે તે જ્ઞાતિઓમાં કાંઇ સુધારાનો સવાલ હોતો નથી; ત્યાં બહુધા પોષણ અને સુખવૈભવનો જ સવાલ હોય છે. કૈંક ગોળોમાં અપરિણિત-કુંવારા યુવાનોની સંખ્યા હોતાં છતાં તેમને કન્યા ન આપતાં રંડાયા બીજવરની વાટો જોવાય છે. સામાન્યતઃ પુરૂષો કરતાં સ્રીઓની સંખ્યા વધારે, અને પુરૂષોમાં બધા સ્રીનું પોષણ કરવાની શક્તિ ધરાવનારા નહિ; આવી સ્થિતિમાં વિધવાઓનાં પુનર્લગ્ન-નાતરૂ શરૂ થાય, એ થતા અનાચારના ખાળે ડુચા મારી, દરવાજાઓ ખોલી નાખવા જેવું છે. આથી કન્યાઓને માટે ગર્ભપાત કરવાની કે બાલકો દૂર કરી નાખવાની શાળા ઉઘાડવા જેવું જ થવાનું.

એકંદર રીતે જોતાં જણાશે કે, વિધવાઓ ફરી પરણે કે ન પરણે એ એક કૂટ પ્રશ્ન છે. અને એ પ્રશ્નનો ઉકેલ, જેમ બને તેમ વધારે સંયમ રાખી બ્રહ્મચર્ય જીવનથી જીવવું, એથી જ આવી શકે તેમ છે. ધાર્મિક દૃષ્ટિએ તો આવો પ્રશ્ન

અને તેની જાહેર ચર્ચા સર્વથા અધર્મ્ય છે. મારૂં મન ચંચળ થાય તો તેને યથેચ્છ માર્ગે ચાલવા દેવા કરતાં, ભૂતકાલમાં બોલાયલાં પ્રતિજ્ઞાવચનોને વફાદાર રહી, દબાવવું અને ઇન્દ્રિયોને સંયમમાં રાખવી એ જ મારૂં કર્તવ્ય છે' આવા આવા વિચાર ધરાવનારી વિધવાઓને પુનર્લગ્નની વાતો કે વિતંડાવાદી ચર્ચાઓ કેટલી હાનિ પ્હોંચાડે છે એનું, આજકાલના કેટલાક લેખકો અને કવિઓને ભાગ્યે જ ભાન હોય છે. તેઓ પણ સમાજના ઉંડાણમાં ઉતરી વસ્તુસ્થિતિ તપાસવા પૂર્વક પુખ્ત–નહિ કે ઉપલક, અનુભવ મેળવે અને પછી આર્યદૃષ્ટિથી અવલોકન કરે તો, તેમને પણ જરૂર પોતાની વાતો પર ઘૃણા અને એ વિષયના અજ્ઞાન પર તિરસ્કાર આવ્યા વિના રહેશે નહિ.

વિકૃતદૃષ્ટિએ ગમે તેમ દેખે, પરંતુ આજે ય ઘણી વિધવાઓ પવિત્ર અને સન્માર્ગે જવા ઇચ્છનારી છે. તેમને ધર્મ અને પરમેશ્વર પર અખંડ વિશ્વાસ અને પ્રેમ હોઇ, તેઓ પોતાના પતિના નામે જીવવા ઇચ્છતી હોય છે. પોતાની જાત પર મરાયલી 'અમુકની વિધવા' એ છાપ ભુંસવા તેઓ જરાય તૈયાર હોતી નથી, એટલું જ નહિ, પરંતુ એ છાપની નીચે જ રહેવામાં પોતાનું ગૌરવ સમજે છે. સમાજે અને સમાજના વિચારકોએ તેમની એવી સુંદર ભાવનાને પોષવા બનતું કરવું જોઇએ. તેમની મુશીબતો અને અડચણો દૂર કરી, તેમના નીતિમય અને ધર્મમય જીવનમાં તેમને રસ પડે એવું કાંઇ કરી આપવું જોઇએ, સમાજની અને કુટુમ્બીજનોની ફરજ છે કે, તેમને શૃંગારિક ભાવોથી બને તેટલી દૂર રાખી શુદ્ધ ધર્મ તરફ વાળવા પ્રયત્ન કરવો જોઇએ, એમની તરફ પવિત્રતાથી, પૂજ્યતાથી અને સભ્યતાથી વર્તી તેમના ઉચ્ચ જીવનનું ભાન તેમના હૃદયમાં સતત જાગૃત રખાવવું એ કુટુમ્બની સર્વ સ્ત્રીઓએ ધ્યાનમાં રાખવું જોઇએ. આથી કુટુમ્બની પણ નીતિ, સભ્યતા અને ખાનદાની પોષાશે. આવી પવિત્ર સાધ્વીશી વિધવાઓ કુટુમ્બમાં મર્યાદાથી નિયામક થતી હોય તે જેવો તેવો આદર્શ નથી. કુટુમ્બ કેટલું ભાગ્યશાળી છે તેનો નિર્ણય તે કુટુમ્બમાંની કન્યાઓના અને લલીતાઓના સતીત્વથી જ થવો જોઇએ. કુટુમ્બ પ્રતિ હિતથી અને જગતપ્રતિ દયાભાવથી વર્તી જે સતી 'એકની જ, બીજાની નહિ જ.' એ પવિત્ર ભાવનાની પાછળ રહી, પોતાનું ધર્મકર્તવ્ય શાંતિથી અને ઉમંગથી બજાવે છે; અને પોતાના આત્માને પ્રભુના ચરણમાં રાખી તેના સ્મરણમાં અને અન્યાન્ય ભક્તિમાં પોતાનું જીવન વીતાવે છે, તે ધન્યવાદને પાત્ર છે, નમસ્કાર કરવા લાયક છે એટલું જ નહિ, કિન્તુ તેનાં માબાપ અને કુટુમ્બીઓ પણ ધન્ય અને નમસ્કરણીય છે.

વિધવાઓ પોતાની આવશ્યક્તાને જતી કરતી હોય કે નભાવી લેતી હોય,

પણ કુટુમ્બે કે સમાજે તે તરફ લેશ પણ આંખ મીંચામણાં કરવાં ન જોઇએ. તેમનું જીવન રાંક કે દયાજનક છે એવી ભાવના આવતી અટકાવવાને સર્વ પુરૂષાર્થો કરવા લાગતાવળગતાઓએ ન ચુકવું જોઇએ. વિધવા એ નકામી ચીજ નહિ, પણ ઘરની આધારભૂત દૈવી ચીજ છે એ ભાવના રાખી, તેમના તરફથી લાભો કેવી રીતે લેવાય એ વિચાર થવો જોઈએ. વિધવા પ્રતિ સારી રીતે વર્તવા કુટુમ્બને ન કહેવાતું હોય, સમાજ તેવો બનવા ન તૈયાર થતો હોય, તો પછી તે વિધવાઓનાં પુનર્લગ્ન કરીને પણ શું પ્રીણવાનો હતો ? સમાજમાં રહેલી નબળાઈ ગમે તે રીતે–એક યા બીજા રૂપે નડવાની જ. પુનર્લગ્નનો રસ્તો પણ તેને માટે ભયંકર અને નાશજનક થઇ પડવાનો. જે પુરૂષો વિધવાઓને ફોસલાવી વ્યભિચારમાં નાખી ગર્ભપાતાદિ કરાવે છે, તેઓ પોતાની ચાલાકી અને ચતુરાઇને ઉપયોગ પતિઓને મરાવવા જેવા અધમ કાર્યમાં પણ અવશ્યમેવ કર્યા સિવાય રહેવાના જ નહિ. પુનર્લગ્ન કરનારી સમાજની પરિસ્થિતિએ પહોચતાં જેટલો ભોગ આપવો પડે, તેના કરતાંય ઓછા ભોગે વિધવાઓને ઉચ્ચ સ્થિતિમાં મૂકી શકાય તેમ છે. શા માટે દૈવી પંથ છોડી રાક્ષસી પંથે જવા ઇચ્છા ધરવી ?

ફરજીયાત લુગડાં પહેરવાં પડે છે, તેમાં કવચિત્ 'જૂ' પણ પડે, પણ તેથી નાગા ફરવાનું કે જંગલીઓનું અનુકરણ કરવાનું કહેવાતું નથી. જેને જૂ પડે તે વીણે કે ઉપદ્રવ સહન કરે પણ સમાજ નાગા રહેવાનો માર્ગ સ્વીકારતી નથી એ વાત ખાસ લક્ષ્યમાં રાખવા જેવી છે. છતાં આખો સમાજ બ્રહ્મચર્યની કીમ્મત ભૂલી જઇ તેમ કરી નાખવા–પુનર્લગ્નના પંથે જવા તૈયાર થતો હોય તો તેને બલાત્કારથી કોઇ અટકાવતુંય નથી. પણ એ હીનપંથે જવા પ્રેરણા અને ઉપદેશ, હિતાહિતના વિવેકથી શૂન્ય અને આવેશભરી તાત્કાલિક પાપપોષક દયાથી કે અનાદિ કાલીન વિષયવાસની ભાવનાથી, નજ થવાં જોઇએ. લેખકો, કવિઓ અને વક્તાઓ આર્યોની બ્રહ્મભાવના પોષે, એમાંજ એમનું ગૌરવ છે. આત્મ સ્વભાવ, આર્યોનો આદર્શ, પવિત્રમાં પવિત્ર જીવન, મહાપુરૂષોનો ઉપદેશ, દૈવી ભાવના, દયામાર્ગ, સ્વતંત્ર જીવન, જીવનમુક્તતા અને મોક્ષપ્રાપ્તિ એ સર્વ બ્રહ્મચર્યમાં છે, અબ્રહ્મમાં નથી, આ વાતને તેઓમાંના કોઇ પણ કયારે ન ભૂલે, મુનશીઓ–મતસ્વીઓ ન બને, એવી સદ્‌ભાવપૂર્વક આશા ન રાખી શકાય ?

"મૂર્તિપૂજાના વિરોધમાં ...."

લેખક- મુનિ ન્યાયવિજયજી (અમદાવાદ.)

(ગતાંક પૃષ્ઠ ૩૨૬ થી અનુસંધાન)

ભારતમાં મૂર્તિ પૂજાનો વિરોધ ઈસ્લામના આવાગમન પછી જ થયો છે. અને એ સંસ્કારની દૃઢ અસર જેને જેને થઈ તેમણે મૂર્તિનો વિરોધ ઉઠાવ્યો લોંકાશાહના સમયમાં ભારતમાં ઈસ્લામી સામ્રાજ્યનો મધ્યાન્હ હતો. સર્વત્ર તેની હાક ફેલાયેલી હતી. મંદિરો અને મૂર્તિઓ તોડવી; તેનો ધ્વંસ કરવો એ તો મામુલી વાત હતી. સતીઓનાં સતીત્વ લુંટાતાં, હિન્દુઓનું હિન્દુત્વ લુંટાતું, ઈસ્લામની બોલબાલા હતી, એક હાથમાં તરવાર અને એક હાથમાં કુરાન લઇ ઈસ્લામનો ઝંડો ફરકાવતો હતો. આ સમયે લોંકાશાહનો વિચાર પલ્ટો થયો, અને તેમણે જૈનધર્મમાં મૂર્તિનો વિરોધ સૌથી પ્રથમ ઉઠાવ્યો, જેના પરિણામરૂપે સ્થા. સંપ્રદાયની સ્થાપના થઈ તેમાં પ્રથમ કોઇ સાધુ ન હતા, અને તેમાંય દિન રાત મુહપત્તિ બાંધવાની પ્રથા તો લોકાશાહ પછી ઘણા વર્ષો બાદ જ શરૂ થઇ છે. ખેર એનું વર્ણન તો વળી ભવિષ્યમાં કરીશ પરન્તુ વર્તમાન યુગમાં જૈનધર્મમાં મૂર્તિપૂજા કેટલા પ્રાચીનકાલથી શરૂ છે તે વિષયનાં કલિકાળ સર્વજ્ઞ આચાર્ય ભગવાન શ્રીહેમચંદ્રાચાર્યજીનાં થોડાં વચનો આપી આ લેખ પૂર્ણ કરીશ.

"कृतपारणकः स्वामी, श्रेयांसदानात्ततः
जगामाऽन्यत्र नैकत्र, तिष्ठेच्छद्मस्थतीर्थकृत् ॥ १ ॥
भगवत्पारणस्थानातिक्रमं कोऽपि मा व्यधात्
इति रत्नमयं तत्र, श्रेयांसः पीठमादधे ॥ २ ॥
त्रिसन्ध्यमपि तद् रत्नपीठं भक्तिभरानतः
श्रेयांसः पूजयामास, साक्षात्पादाविव प्रभोः" ॥ ३ ॥

ભાવાર્થ-"શ્રીઋષભદેવ ભગવાન તીર્થંકર શ્રેયાંસકુમારના દાનથી પારણું કરીને અન્યત્ર વિહાર કરી ગયા. ભગવાનના પારણાના સ્થાનનું કોઇ ઉલ્લંઘન ન કરે એટલા માટે તે સ્થાનમાં શ્રેયાંસકુમારે રત્નમય પીઠ-સ્તુપ બનાવ્યો એ રત્નપીઠ-સ્તુપની જાણે સાક્ષાત ભગવાનનાજ ચરણકમલ હોય તેમ ભક્તિથી શ્રેયાંસકુમાર ત્રિકાલ પૂજા કરવા લાગ્યા.

અર્થાત્ આ યુગની શરૂઆતમાં શ્રીઋષભદેવ ભગવાનની દીક્ષા પછી પ્રથમ પારણાના દિવસથી જ જૈન ધર્મમાં સ્તૂપપૂજાની શરૂઆત થઇ છે.

આવીજ રીતે બાહુબલીએ શ્રીઋષભદેવજી ભગવાન તક્ષશિલાના ઉદ્યાનમાં પધાર્યા, તેના બીજે દિવસે વંદના કરવા જવાને વિચાર રાખ્યો હતો, પરન્તુ પ્રભુજી બીજે દિવસે અન્યત્ર વિહાર કરી ગયા પછી પ્રભુજીના ચરણ ઉપર સ્તૂપ બનાવ્યો હતો. જૂઓ તેનું વર્ણન પણ કેવું પ્રાકૃતિક અને મનોહર છે.

"पदान्येतानि मास्माऽतिक्रमेत् कोऽपीति बुध्धितः
धर्मचक्रं रत्नमयं, तत्र बाहुबलिर्न्यधात् ॥ १ ॥
अष्टयोजनविस्तारं तच्च योजनमुच्छ्रितम्
सहस्रारं बभौ बिम्बं, सहस्रांशोरिवाऽपरम् ॥ २ ॥
त्रिजगत्स्वामिनस्तस्य, प्रभावादतिशायिनः
सद्यस्तत्कृतमेवैक्षि, दुष्करं द्युसदामपि ॥ ३ ॥
तत् तथाऽपूजयद् राजा, पुष्पैः सर्वत आहृतैः
समलक्षि यथा पौरैः पुष्पाणामिव पर्वतः ॥ ४ ॥
तत्रप्रवरसंगीतनाटकादिभिरुद्भटम्
नन्दीश्वरे शक्र इव स चक्रेऽष्टान्हिकोत्सवम् ॥ ५ ॥
आरक्षकानर्चकांश्च तत्राऽऽदिश्य विशांपतिः
नमस्कृत्य च कृत्यज्ञो, जगाम नगरी निजाम् ॥ ६ ॥

ભાવાર્થ:-પ્રભુજી જે સ્થાને કાઉસ્સગ ધ્યાને રહ્યા હતા, અને જ્યાં પ્રભુજીના ચરણની આકૃતિ સ્પષ્ટ દેખાતી હતી, તે સ્થાનનું કોઈ ઉલ્લંઘન ન કરો એવી બુદ્ધિથી બાહુબલીએ ત્યાં **રત્નમય ધર્મચક્ર** બનાવ્યું.

તે આઠ યોજન ચોડું-પહોળું અને એક યોજન ઉંચું-લાંબું હતું. જાણે બીજો સૂર્ય હોય-સહસ્રરશ્મિ હોય તેમ એક હજાર આરાવાળું એ ધર્મરત્ન હતું.-ધર્મરત્ન એક હજાર આરાથી શોભતું હતું. અતિશયવાળા એ ભગવાનના પ્રભાવથી દેવતાઓને પણ દુષ્કર-દુર્લભ એવા તે કાર્યને, એ જોતો હતો.

પછી રાજાએ તાજાં નવાં લાવેલાં પુષ્પોથી તે સ્તૂપની-ધર્મચક્રની પૂજા કરી. લોકોએ તો જાણે પુષ્પનો પર્વતજ હોય તેમ આ ધર્મચક્ર જાણ્યું.

સંગીત અને નાટકાદિથી મનોહર નંદીશ્વરદ્વીપમાં જેમ દેવતાઓ અષ્ટાન્હિકા મહોત્સવ કરે છે, તેમ બાહુબલીએ પણ ત્યાં અષ્ટા . મહોત્સવ કર્યો પછી રક્ષકોને-પૂજા કરવા વાળાઓને આદેશ આપી ધર્મચક્રરત્નને નમસ્કાર કરી રાજા બાહુબલી પોતાની નગરીમાં-તક્ષશિલામાં ગયા.

અપૂર્ણ

जीवहिंसा निरोध में मुनिश्री की आदर्श सेवा

ले कस्तुरचंद जैन

विज्ञ पाठको ! यह तो लोक प्रचलित मान्यता है कि जैन धर्म बहुत पवित्र, आदर्श, उज्वल' एवं कलंक कालिमा विहीन धर्म है। इसके सार्वभौमिक अहिंसा तत्व की गंभीर छाप अधिकांश जनसमुदाय के हृदय पर पूर्णतया अंकित है वास्तव में अहिंसा तत्व का सूक्ष्मातिसूक्ष्म निरूपण एवं प्रतिपादन जितना जैन शास्त्र में किया गया है उतना अन्य किसी भी शास्त्र में नही है। हमारे साधु समाज के जीवन का वह अचल सिद्धान्त होते हुए भी लोक में इसका जितना अधिक प्रचार होना चाहिये उतना नहीं हो रहा है इसका मुख्य कारण यही है कि श्रमण वर्ग ने केवल स्वार्थ जनित अहिंसा पालन में ही अपना सर्वस्व समझ लिया है और उस सूक्ष्म अहिंसा की ओटमें स्थूल हिंसा रक्षण की उपेक्षा सी हो गई है। वैसे यदि परमार्थ दृष्टि से विचार किया जाय तो हिंसा मात्र त्याज्य है चाहे वह सूक्ष्म हो चाहे स्थूल. किंतु सूक्ष्म हिंसा की रक्षा को अधिक महत्व दे देना और प्रकट स्थूल हिंसा रक्षण की ओर अल्प मात्र भी लक्ष्य न देना नितान्त न्याय विरुद्ध है। बंधुओ ! अब वह चौदहवीं शताब्दी का जमाना नहीं रहा अभी तो वीसवी शताब्दी प्रवर्त रही है समाज में भी ६—७ शताब्दी से रूपान्तर होता जा रहा है और वह पूर्व कालकी अपेक्षा अभी कुछ आगे बढ़ गया है। बीसवीं शताब्दी के समाज के समक्ष चौदहवीं शताब्दी की वाते अब रुचिकर एवं महत्व पूर्ण नहीं सिद्र होगी। अब तो कुछ ऐसे कार्य कर दिखाने चाहिये कि जिससे वीसवीं शताब्दी का नवयुवक समाज भी हमारे प्रयत्नों में सहमत होकर सह योग प्रदान कर सके। ऐसा होने पर ही हम अपने प्रयत्न में पूर्ण सफल हो सकेंगे और लोक कल्याण की जो हमारी भावना है उसकी कतिपयांश में पूर्ति हो सकेगी। अरे ! अब तो श्रमण वर्ग को भी द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव को अभि मुख रख कर एवं निजाचार रूप कर्तव्य में परायण होकर ही किसी जनसमाजोपयोगी विषय का प्रतिपादन करते रहना चाहिये इससे समाज सुधार मार्ग की ओर अवश्य प्रवृत्ति करेगा। कारण जबतक नायक का लक्ष्य सुधार की ओर या उच्च ध्येय की ओर न होगा तब तक प्रजा पर उसका यथावत् प्रभाव अंकित न हो सकेगा। वर्तमान में समाज की गतिविधिको देख कर इतना तो सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि आधुनिक समाज जागृति के आंदोलन से, व श्रावक वर्ग में नूतन चैतन्य भाव का संचार हो जाने से व साधु वर्ग में नवीन प्रवाह प्रवाहित हो जाने से अब किंचित् मात्रा में श्रावक वर्ग और श्रमण समाज का ध्यान विशेषरूप से जीव रक्षण की ओर आकृष्ट हुआ है। इस का कुछ श्रेय हमारे उन मुनिवरों के पल्ले पड़ता है जो कि इस ओर तन मन देकर पूर्ण

सेवा बजा रहे हैं। वास्तव में वर्तमान में इसकी इतनी अधिक आवश्यकता है कि जिसके लिये लिखाना ही व्यर्थ है। इस आवश्यकता पूर्ति के लिये अब से कुछ साधु वर्ग भी प्रयत्न शील हो रहा है जिसके परिणाम स्वरूप इत उत सुंदर जागृति की नूतन लहर लहरा रही है। इस का एक ताजा उदाहरण हाल ही में हमें धन्नापुर ग्राम में मिलता है। धन्नापुर यह जोधपुर स्टेट में शिवगंज (मारवाड) से दो कोस की दूरी पर एक गांव है। वहां पर एक देवी का मंदिर है जहां बहुत समय से जीव हिंसा का प्रचार था और मूढ लोगों के हृदय; हिंसा के वातावरण से पूर्ण रंग गये थे यहां तक कि हिंसा निरोध का उपदेश देनेवाला भी उनसे सही सलामत नही बच सकता था वे इस प्रकार के आंदोलन करने वाले को धर्म द्रोही, एवं माता द्रोही समझते थे। इस प्रकार जीव हिंसा का वातावरण वहां बहुत गरम हो रहा था किंतु अपने गुरुवर्य सूरिसम्राट्, तीर्थोद्धारक श्री श्री १००८ श्री श्री विजयनीतिसूरीश्वरजी म. के आदेश से सुव्याख्याता, भद्रकपरिणामी मुनि श्री भद्रानंदविजयजी म. सा.उक्त गांव में पर्यूषणों में व्याख्यानोपदेश देने के लिये पधारे। आपने अपने अनवरत उपदेश प्रभाव से तत्रस्थ श्रावकों व ठाकुर साहेब को वश में कर लिया। सब पर व्याख्यान का उत्तम असर पडा। अब क्या था? जहां का राजा ही वश में है वहां की प्रजा के वश होने में क्या देरी लगती है? कुछ नहीं। ठाकुर साहेब को खूब समझाकर उनको अपने इस कार्य में सहमत कर बलिदान के दिवस मुनिश्री अपनी श्रावक संपदा सहित उसी माता के मंदिर के पास आये जहां कि अनेक निरपराध भोले किंतु मूक पशुओं का प्राण व्यपरोपण किया जाता था। मुनि श्री इस कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिये अनशन व्रत अंगीकार करके ही निकले थे। जब भाद्रपद की चतुर्दशी के दिन सब अज्ञ लोग बलिदान लेकर आये तब मुनि श्री ने अपनी ओजस्वीव्याख्यान कला से सब की भावना में सहसा परिवर्तन कर दिया। वास्तव में परिश्रम कभी व्यर्थ नहीं जाता उसका कभी न कभी सुपरिणाम निकलता ही है। एक तो मुनि श्री का चारित्र बल, द्वितीय तपो बल, एवं तृतीय व्याख्यानोपदेश बल इस प्रकार त्रिबल त्रिपुटी के सहयोग से आपने पूर्ण सबलता प्राप्त की और उक्त स्थान पर उस दिन से हिंसा न होने का पूर्ण वचन तत्रस्थ समाज से ले लिया। अब भी वहां हिंसा नहीं होती है ऐसा विश्वस्त सूत्र से ज्ञात हुआ है। धन्य है; ऐसे मुनिवरों को जो कि ऐसे पारमार्थिक कार्य की ओर सतत प्रवृत्ति कर दुखियों के दुःख को दूर करते हैं। यदि मुनि श्री के इस स्तुत्य प्रयत्न का और आदर्श सेवा धर्म का अन्य मुनिगण भी अनुकरण करेंगे तो समाज में बहुत जागृति हो सकेगी और निरपराध मूक पशु अभयदान प्राप्त कर सब को शुभाशीष प्रदान करेंगे।

રાધનપુરની વરખડીની પ્રાચીનતા

લેખક–લક્ષ્મીચંદ પ્રેમચંદ

તુરક ભણી દીયે પાંચસેં દામ, પરતમા આણે નિજ ઠામરે. પાસજી.

× × × × ×

રૂના ભરીયા ઉંટ વીસ, માંહે બેસાડયા પ્રભુને ઉછાંહેરે. પાસજી.
અનુક્રમે ચાલ્યા પાટણમાંથી, સાથે મુરતિ લેઈ તિંહાથીરે. પાસજી.
આગળ રાધણપુરે આવ્યા, દાણી દાણ લેવાને આવ્યા રે. પાસજી.
ગણે ઉંટ રૂ.નો કરે લેખો, એક અધિકો ઓછો દેખેરે. પાસજી.
મેઘાશાને દાણી મલી પૂછે, કહો શેઠજી કારણ શું છે રે. પાસજી.
દાણી મલી વિચારે મનમાં, એતો કૌતક દીસે છે એણુમાંરે. પાસજી.
તવ મેઘો કહે સાંભળો દાણી, અમે મૂરતિ ગોડીની આણીરે. પાસજી.
તે મૂરતિ એ વરકિ માંહે, કિમ જાલવીએ બીજે ઠામેરે. પાસજી.
પારસનાથ તણે સુપસાયે, દાણી દાણ મેલી પરે જાયે રે. પાસજી.
યાત્રા કરી સહુ નિજ ઘર આવે, જિન પગલા આનંદ થાપેરે. પાસજી.
તિહાંથી આવ્યા પારકર માંહે, ભૂદેશર નયર ઉછાંહેરે. પાસજી.

× × × × ×

એ પરતમા પૂજો તમે, ભાવ આણીને ચિત્ત. મેરેલાલ.
બાર વરસ લગે તિહાં, પૂજે ખરચે વિત્ત. મેરેલાલ.

× × × × ×

તિહાં વેલ હાંકીને ચાલીયો, આવ્યુ ઉજડ ગોડીપુર ગામરે.

× × × × ×

સંવત ચૌદ બત્રીસમે રે લો, ફાગણ સુદની બીજ. ભવિપ્રાણી
સંવત ચૌદ ચુમાલમાં, દેરે પરતિષ્ઠા કીધ.

× × × × ×

મહિમા મેરો મેઘાતણો, રંગે જગમાં જસ લીધ. ભવિજન.

× × × × ×

સંવત અઢાર સતલોતરે, ભાદરવા માસ ઉદાર.
હાંજી તેરસ કુંજ વાસરે, એમ નેમવિજય જયકાર. આજ.

નોટ—આ બધા પદો શ્રીગોડી-પાર્શ્વનાથ તથા મેઘાકાજળના સંવત ૧૮૭૭ના ભાદરવા સુદિ ૧૩ના પં. રૂપવિજયજી કવીવરના પ્રશિષ્ય મુનિશ્રી નેમવિજયજીના બનાવેલા ઢાળીયામાંથી મૂકેલા છે.

ઉપરોક્ત ગોડી-પાર્શ્વનાથના ચમત્કારિક દ્રશ્યોના પદો. અને ઇતિહાસ-કાળની મેળવણી કરતા સમજાય છે કે, વિક્રમની પંદરમી સદીના પહેલાજ દશકા (સં. ૧૪૦૮)થી તઘલખ વંશના ત્રીજા નૃપતિ ફીરોજશાહનો, ગુજરાત સમેત હિંદ પર રાજ્ય અમલનો કાળ હતો. વળી તેમનાજ ૩૮ વર્ષના રાજ્યાધિકાર-માંજ આ ભવ્ય મૂર્તિ અણહિલપુર પાટણથી મેઘાશાએ કોઈક મુસલમાન પાસેથી વેચાણ મેળવવાના, કાર્યથી તે વિ. સં. ૧૪૪૪ના પ્રતિષ્ટા અને શિખર ચઢાવવા પર્યંતના ચમત્કારી પ્રસંગો બનેલ સંભવે છે.

આ તવારીખનું આખુ મંડાણ ગોડી-પાર્શ્વનાથના ઢાળીયાં પરથી લેવાયેલુ હોવાથી, તે પદોનો ટુંકાણમાં સારાંશ આપવાનું અતિ આવશ્યક જણાતા તેનો ઉલ્લેખ કરીએ છીએ.

ઢાળીયાંની જોડ કળામાં બતાવાતી કેફીયત પ્રકાશ પાડે છે કે, વિક્રમ પંદરમી સદીના પ્રારંભની વીસીના કાળમાં, સિંધ ઇલાકાના તાબાના થરપારકર તાલુકાના ભુદ્દેશ્વરપુર નગરે, પરમાર વંશના ઠાકોર રાયખેંગારજીની છત્રછાયા હેઠળ, અનેક વહેવારીયાઓ સુખરૂપ વાણિજ્ય ખેડતા હતા. એકદા તે પૈકીના કાજળશા શ્રેષ્ટીએ પોતાના બનેવી મેઘાશાને સૂચન કર્યું કે, આપણા બન્નેના સહિયારા તમો ગુજરાત ભણી વાણિજ્ય ખેડનાર્થે પધારો. મેઘાશાએ નિર્ણયાત્મક નિશ્ચય કરી, કરિયાણાના ઉંટની કતાર ભરી, શુભ દિને, શુભ મૂહુર્તે અને શુભ શુકને દેશાટનનો પ્રારંભ કરી, ગ્રામાનુગ્રામ ક્રયવિક્રય કરતાં અનુક્રમે અણહિલ-પુર પાટણ પહોંચ્યાં.

એકદા પાટણમાંજ મેઘાશાને યક્ષે રાત્રે સ્વપ્ન આપ્યુ કે, અહિઆ અમુક મુસલમાનના તાબામાં, દાનવીર ગુર્જરનરેશ કુમારપાળના શાસન કાળમાં, કળી-કાળ સર્વજ્ઞ શ્રીમદહેમચંદ્રાચાર્ય ગુરૂવર્યના વાસક્ષેપથી અંજનશલાકા વિ. સં. ૧૧૯૯માં કરાયેલા, પરમ પ્રભાવિક પાર્શ્વનાથની પ્રતિમા છે. તમો તેને પાંચસો દામ આપી ખરીદિ પૂજન ભક્તિ કરજો. વળી તેજ મુજબ મુસલમાનને પણ સ્વપ્ન આપેલ કે, મેઘાશા તારી પાસે મૂર્તિ લેવા આવે તો પાંચસો દામ લઇ આપજો, અને જો નહિ આપો તો તને મારી નાખીશ. આમ પરસ્પર બન્નેને સ્વપ્ન આપતાં, તે પ્રકારના ક્રયવિક્રયના કાર્યમાં તેઓ ઉત્તેજક બન્યા, જેના પરિણામે મેઘાશાએ તે વખતમાં પાટણમાં ચાલતા ચલણી નાણાના પાંચસો સિક્કા આપી, પ્રભાવિક પ્રતિમાને ખરીદિ લીધા બાદ સાથેના કરિયાણાનો વકરો કરી રૂ આદિ નવા કરિયાણાના ઉંટોની કતાર ભરી, એક ઉંટની વરકી (બોરા)

માં રૂની વચ્ચે મૂર્તિને છુપાવી, માદરવતન તરફ પ્રયાણ કરતા, રસ્તામાં પાટણથી વીસેક ગાઉના અંતરે મહાજનના મોટા સમુદાયથી ભરપુર રાધણપુર શહેર આવતા, ભીલોટી દરવાજા બહાર જ્યાં આજે વરખડી નામથી ઓળખાતું ગોડી પાર્શ્વનાથના પાદુકાની દહેરીવાળુ સ્થાન જે ભૂમિ પર આવેલુ છે, તેજ સ્થળે પ્રસ્થાન કરી, વિશ્રાંતી લેતા, કરિયાણાનું દાણ લેવા દાણી આવતા, ઉંટોની સંખ્યા અનેકવાર ગણતા છતાં, નિશ્ચીત આંકડો નક્કી ન થતા, દાણીએ વિસ્મય પામી મેઘાશાને પૂછતા કહ્યું કે, આ કતાર પૈકી એક ઉંટની વરકીમાં રૂની વચ્ચે પાર્શ્વનાથ પ્રભુની ચમત્કારી મૂર્તિ છે.

આ ચમત્કારી દ્રશ્યની પવન વેગે શહેરમાં જાણ થતા, નાગરીકોના અનેક વૃંદો અને શ્રીમાન ધીમાન વર્ગનો સમુદાય પ્રસ્થાન સ્થળે ઉભરાતા, શાન્તિ-વર્ધક પ્રભુ પડિમાના દર્શન કરાવવાની મેઘાશાને વિજ્ઞપ્તિ કરતાં, સકળ સંઘને પ્રભુનાં દર્શન કરાવ્યાં.

આ આનંદોત્સવના વેગ અને સંભારણામાં સંઘે તેજ દર્શનવાળા (આજની વરખડીની પાદુકાની દહેરીવાળા) સ્થળે તેજ કાળના અરસા (વિ સં. ૧૪૨૦) માં સ્તૂપ (દહેરી) બનાવરાવી, તેમાં ગોડી–પાર્શ્વનાથની પાદુકાની કોઇ ગીતાર્થ ગુરૂવર્યના વાસક્ષેપથી સ્થાપના કરાવેલ હોય! અને તેજ રાજ્યે પોતાની હદનુ દાણ લેવાનું નિર્ણિત ઉંટનો આકડો નકી ન થવાના ચમત્કારથી મોકુફ રાખેલ હોય તેવી દંત કથા દર્શાવતુ લખાણ "રાધનપુર ડીરેક્ટરી"ના પૃષ્ઠ ૯૪ માં છે. સંભવ છે કે મેઘાશા ભુદેશ્વરપુરથી ગુજરાત ભણી ધંધાર્થે કતાર લઇને નીકળી પાટણ પહોંચ્યા, ત્યાંથી પ્રભાવિક પ્રભુની મૂર્તિને ખરીદિ. પાછા કપાસાદિ કરિયાણાની કતાર પાટણથી ભરી રાધનપુર, મોરવાડા, સોઇગામ, બેણપ આદિ મહાજનના સમુદાયવાળા સ્થળે પ્રભુના ચમત્કાર અને દર્શન કરાવી હરેક સ્થળે યાદગીરી નિમીત્તે સ્તુપાદિ સ્થળો સ્થાનિક સંઘો પાસે બનાવરાવી પાદુકાની સ્થાપના કરાવી, અનુક્રમે જન્મભૂમિ પહોંચ્યા સુધીના હરેક પ્રસંગો વિ. સં. ૧૪૨૦નીજ સાલમાં બનેલ હોય, સબબ કે ભુદેશ્વરપુર પહોંચ્યા પછી તેજ શહેરમાં બાર વર્ષ સુધી પૂજન ભક્તિ કરી, (વિ. સં. ૧૪૨૦–૧૨) વિ. સં. ૧૪૩૨માં એકાદ દિને યક્ષે સ્વપ્ન આપવાથી તેજ ગામના દેવળ ભરવાડને ત્યાંથી, તરતમાંજ જન્મેલા એકાદ બે દિવસની ઉમ્મરના વાછરડા લઇ તેને આકા ડોકા (જાર તથા એરંડાની સાંઠી)ની ભાવલ ચારણની ગાડીને જોડી, તેમાં પ્રભુની પ્રતિમા મૂકી બાંડાથલ તરફ ઉભા વગડે, ઉજ્જડ રસ્તે, ટેકરા, ટેંબા ઉલંઘન કરતાં, ઘોર અંધકાર છવાતા રેતના ઢગલા ખાડાઓવાળા વગડાની ભયંકરતા વચ્ચે ગાડી એકાએક સ્થંભાતા, મેઘાશા વગડાઉ રાફડા, ક્ષીણો તથા ઝાડીમાં રહેતા, વિકાળ પ્રાણીઓના હૃદય કંપાવી નાખતા નાદોના ગુંજારવ વચ્ચે પ્રભુનું

ચિંતવન કરતા, ઘસઘસાટ ભર નિદ્રામાં આવતા સ્વપ્ન આવ્યુ કે, ચિન્તાથી મૂક્ત બનો. આજ સ્થળની પરિધિમાં જ્યાં નિલુ છાણુ પડેલુ હોય તથા ઉજ્વળ આકડો હોય તે તળે, અને અક્ષતથી સ્વસ્તીક પુરેલો હોય ત્યાં ખોદાવતા અનુક્રમે જળ, દ્રવ્ય, અને પથ્થરનો અખૂટ સમૂહ નીકળશે. માટે આ સ્થળે ગામ વસાવી, પ્રભુનું નમણુ લઈ શિરોહિ જઇ કોઢના રોગથી પિડીત સલાટને નમણુ છાંટતા તેઓ રોગ મુક્ત બનશે. અને તેઓજ નવીન ગામે આવી જિનચૈત્ય બનાવશે, માટે ઉદ્યમ કરો.

સૂચન મુજબ યથાવીધી ક્રિયાનો પ્રારંભ કરતા જળ, લક્ષ્મી અને પથ્થરના અઢળક ભંડારો નીકળતા, તેજ વર્તુળમાં ગોડીપુર નામનુ નગર વસાવવાનું નિર્ણીત કરી, પ્રભુને ગૃહચૈત્યમાં પધરાવી પૂજન પ્રક્ષાલન કરી જિન મંદિર બનાવરાવવાની ઉત્કંઠાથી નમણુ લઈ શિરોહિ પહોચ્યા. કોઢના રોગની પીડાથી અકળાયેલા સલાટને પ્રભુ નમણુ છાંટતા તે રોગ મૂક્ત બનતા હરખાઇ જિન ભૂવન બનાવવા ઉત્સુક બનવાથી શ્રેષ્ટીવર્યની સાથે ગોડીપૂર આવી શુદ્ધ ભૂમિનું શોધન કરી કોઈક ગીતાર્થ ગુરૂદેવ સમીપે જોશી પાસે શુભ દિન અને શુભ મૂહુર્ત જોવરાવી જિનાલયના પાયા પૂર્તિની ક્રીયા કરાવી મેઘાશાએ કુટુંબસહ પોતાનુ નિવાસસ્થાન ભુદેશ્વરપુરથી ફેરવી ગોડીપૂર આવાસ કરી મહા મંગળ કાર્યની શરૂઆત કરાવી.

આમ પૂન્યોદયના પ્રવાહનો વેગ વધતા મેઘાશાની ચૌદીશામાં યશકિર્તીનો ધ્વજ ફરકતો કાજળશાના જાણુવામાં આવતા બનેવી, બ્હેનને મળવાના ઓથા નીચે ગોડીપૂર આવી, આ સમૃદ્ધિ પ્રાપ્તિમાં અમારો અડધો ભાગ છે. તેમ કહેતાં મેઘાશાએ સ્પષ્ટ સુણાવી દીધુ કે આ બધો ચમત્કારી પ્રભુનો પ્રતાપ છે. મ્હારી જાત કમાઇ નથી. વળી અમારા ભાગે આ પ્રતિમા તમોએજ આપેલ હોઈ તે અમારી સ્વતંત્ર માલીકીની હોવાથી તમારા અને અમારા વચ્ચે આ વાણિજ્યમાં મુદ્દલ ભાગ હતો જ નહિ અને છે પણુ નહિ. સ્વયં પોતેજ ભાગની વહેચણી કરેલ હોવાથી ખોટી ભાંજગડ કર્યા વિના "લાગ આવે સોગઠી ભાગવાની" વૃત્તિએ હૃદયમાં હીરની ગાંઠ બાંધીને કાજળશા પોતાના વતન પહોંચ્યા બાદ અમુક સમયના અંતરે પોતાની છોકરીના લગ્નોત્સવ પ્રસંગે હૃદયમાં કાવત્રુ ગોઠવી બાહ્યાડંબરે અતિ આગ્રહપૂર્વક બ્હેન, બનેવી, ભાણીયાઓને જાતે પહોચી તેડી લાવ્યાં. દરમિયાનમાં ગોડીપાર્શ્વનાથના યક્ષે મેઘાશાને સ્વપ્નદ્વારા ચેતવ્યા કે તમો ભુદેશ્વરપૂર મત જશો, છતાં છુટી ન શકો તો પ્રભુનું નમણુ લઇને જશો તો તદ્દન નિર્ભય બનશો. પરંતુ "વીધાતાના લખ્યા લેખ કોઇ મિથ્યા કરવા સમર્થ જ નથી" એ કહેવતાનુસાર આયુષ્યનો અલ્પકાળ હોવાથી યક્ષે સ્વપ્ન આપ્યુ છતાં પર્યટનના ઉત્પાતમાં નમણુ વિસારે પડયું, એના પરિણામે બન્યુ એ કે

કાજળશાના હૃદયમાં મેઘાશાનુ કાસળ કાઢી નાખવાનુ ચિંતવન થતાં નિશ્ચય કર્યો કે આ છુપુ કાર્ય અનહદ વિશ્વાસુ દ્વારાજ થઇ શકશે તેમ વિચારી તે કાર્ય પોતાની અર્ધાંગના મારફત કરાવવાનુ કલ્પી વિનવણી કરી કે મેઘાશાને અતિગુપ્ત રીતે ઝેરી પદાર્થવાળુ દુધ પીવરાવી તેમનો નાશ કરવાનુ કાર્ય તમારે કરવાનુ હોઇ બહુજ કુશળતાથી તે કાર્ય તમો પાર પાડશો.

આવુ અઘટિત ઉચ્ચારણ સાંભળતાંજ સહચારિણીનુ હૃદય કંપી ઉઠતા નાથ પ્રત્યે ધિક્કાર દર્શાવતા વધ્યા કે બ્હેનને રંડાપો અપાવવા પર્યંતનું ષડયંત્ર ગોઠવતા તમારૂ પ્રપંચી હૃદય થરથરતુ નથી ? કુદરત તેને કેમ શાખી શકશે ? અર્થાત તમારા આવા પાપમય કાર્યમાં હું ભાગીદાર મુદ્દલ બનવાની નથી. આવુ નીચ કૃત્ય મહારાથી કદી બનશેજ નહિ, છતા સામ, દામ અને ભેદ નીતિથી ન કલ્પી શકાય તેટલા પ્રયત્નો અને દબાણુથી પત્નિની અનિચ્છાએ પણ કાર્ય કરાવવાની સફળતાથી કબુલાત મેળવી. પ્રસંગોપાત એકદા શાળા બનેવી એકજ ભાણામાં બન્ને સાથે આરોગવા બેઠા. અનુક્રમે ભોજનાદિને ઇન્સાફ આપ્યા બાદ તાંદુલ પીરસાયા કે તરતજ પ્રથમની ગોઠવણી મુજબ ઝેરી પદાર્થવાળુ દુધ સાળાએલી-એ પીરસી દેતાંજ કાજળશા એકદમ ઉગ્ર ક્રોધાવેશમાં આવી પોતાની ભાર્યાને ઠપકો આપતા કહ્યું કે મહારે દુધની આખડી છે તેની તને જાણ હોવા છતા ભાતમાં દુધ કેમ પીરસી દીધું ? હવે મહારે તે ખવાશે નહિ, અને બનેવીને એઠુ છાંડવાની બાધા હોવાથી આ બધુ તેમને ખાવુ પડશે, તેનું પણ તેં મુદલ ભાન રાખ્યુ નહિ. આ ઉશ્કેરાટમાં સરળ સ્વભાવી મેઘાશાએ કહ્યુ કે આ અમે ખાઇ જશુ, તમો ઇલાયદા ચાવલ લઇને આરોગો. એમ કહેતાની સાથે જ સાળાએ જુદી પંગત જમાવી અને મેઘાશા ઝેરી દુધ મિશ્રીત તાંદુલ ખાઇ જતા શરીરની નસેનસમાં ઝેર વ્યાપી જતા અલ્પકાળમાં જ તેઓ દેવગત થતાં નગરમાં કોળા-હળ જામતાં છુપી વાત પ્રકાશમાં આવતા, કાજળશાના અતિ નીચ્ચ અને દુરાચારી કૃત્ય માટે જનતામાં હોહાકાર અને ધિક્કાર વધી પડતા તેની આબરૂ ઇજ્જતમાં ઘણી જ ઝાંખપ પડી, જેને આભારી ભુદેશ્વરપૂરનુ રહેઠાણુ અકારૂ અને શરમજનક થઇ પડતા પ્રાયશ્ચિત રૂપે નીર્ણય કર્યો કે હવે કુટુંબ અને સમૃદ્ધિ સહ આ ગામમાંથી નીકળી મરઘાબ્હેન અને ભાણીયાનું વાલીપાણુ જાળવી બન્નેની લક્ષ્મીથી બનેવીએ આરંભેલ જિનાલયનુ કાર્ય ગોડીપુર વાસીગડુ કરી સંપૂર્ણ કરાવવું.

આ મંદિરને બાવન થાંભલા, બાવન દેહરી અને ત્રણ રંગ મંડપો સમેત વિશાળ ક્ષેત્રફળવાળુ ગગન ચૂંબિત શિખરબંધ બનાવરાવી વિ. સં. ૧૪૪૪ માં મહાન પ્રાભાવિક ગુરૂદેવની આજ્ઞાથી જ્યોતિષ શાસ્ત્ર પારંગત અનુભવી વયોવૃદ્ધ જ્યોતિષિને આમંત્રી ફળાદિપૂર્વક વિવેકભરી રીતે શુભ મૂર્હુતો અને શુભદિનો શોધાવી અન્ય સંઘોને નિમંત્રણ કરી ગજબનાક ઠાઠમાઠ અને ઘણાજ ઉત્સાહના

વેગથી લક્ષ્મીનો સદ્‌વ્યય કરી, શુદ્ધ ક્રિયાકાંડ અને ઉંચ કોટીના મંત્રાક્ષરો સાથે પૂજ્ય ગણાધીશના વાસક્ષેપથી પ્રતિષ્ઠા કરાવી, પરંતુ ત્રણ વાર કાજળશાએ શિખર ચઢાવવા છતાં સ્થિર ન રહેતાં સંઘમાં ઉલ્કાપત સાથે ચિન્તા વધી પડતા યક્ષે મયા અને મેરાજને સ્વપ્નમાં સૂચવ્યુ તે મુજબ શુભ દિને અને માંગળિક મૂહુર્તે અનેક યાચકોને મોંઘેરૂં દાન આપી તેઓના બિરૂદાવળીના નાદોના ગુંજારવ વચ્ચે શિખર ચઢાવી તેના પર ધ્વજદંડ પધરાવી વિજયધ્વજ ફરકતો મૂકી ચૌદીશાએ વાયુના પ્રવાહમાં ધ્વજના ફડફડાટના ગુંજારવથી સકળ સંઘમાં જે ઉલ્કાપાત થઈ રહ્યો હતો તે શાન્ત થયો, અને સર્વત્ર જય જયકાર વર્તાયો.

અપૂર્ણ.

મર્તિ પુજાનો વિકાસ!

યાને

નવાંગી પૂજા સ્પર્શ.

લેખકઃ-બાપુલાલ કાલિદાસ સંઘાણી "વીરબાલ"

જૈન સમાજની પ્રગતિનો પારો ધીરે ધીરે ઉર્ધ્વગામી થતો જાય છે. અને તેને મોખરે મુનિગણમાંનાજ એક વ્યાખ્યાન વાચસ્પતિ આચાર્યદેવ શ્રીમદ્ વિજય રામચંદ્રાચાર્ય જેવા સમર્થ વિદ્વાન હોય એ સુધારકોને રાચવાનો અણમુલ અવસર લેખાવો ઘટે. તેમજ જૈન સમાજના નિરાશાવાદીઓએ આર્તધ્યાનથી અને ઉદ્દામવાદીઓએ રૌદ્રધ્યાનથી સંરક્ષણ મેળવવા છાસવારે બનતા આવા પ્રગતિના પ્રસંગોને ગંભીરતાથી નહિ પણ હળવા હાથે સ્પર્શવું જોઇએ.

ઘણાખરા સુધારકોમાં એવી ભ્રમણા ઘુશી ગઈ છે કે પોતે કોઇપણ પગલું ભરે તે સુધારો અને અન્ય કાંઇ નવીન પગલું ભરે તે 'ભક્તિનો અતિરેક,' કેટલાક તો વળી આચાર્ય દેવશ્રી પાસે તેમના ક્રાંતિપથને પ્રમાણ આપતી શાસ્ત્ર-સાક્ષીઓ માગી રહ્યા છે. પણ એ સુધારકોએ પોતાની વિચારણામાં શાસ્ત્ર-શબ્દોનો કયા દિને હવાલો આપ્યો છે કે તેઓ એવા પુરાવા સમર્થ વિદ્વાન આચાર્યદેવ પાસે માગી શકે?-ક્રાંતિપથની શબ્દશઃ શાસ્ત્રાજ્ઞાઓ કદી કોઈ આપી શકયા છે ખરા?-ક્રાંતિનો રાહ તો સદાય સ્વાધ્યાયથી અંતરમાં સ્ફુરાયમાન થાય છે. એટલે હવે સુધારકોએ સ્યાદ્વાદનો પાઠ ફરીથી પઢી સામાનાં પ્રગતિ-પગલાંનાં મુલ્ય મુલવવાનો સમય પરિપાક થઈ ચુકયો છે.

સુધારકોને શીખ અર્પતા એવા મને કોઇ પાછળથી પ્રશ્ન કરશે કે આચાર્યદેવ શ્રીમદ્‌ના ક્રાંતિ-પગલાંમાં એવું શું તમે નિહાળી ગયા છો કે, જેને લીધે

આવી વકિલશાહી વાત કરવા મંડી પડયા છે. આનો જવાબ હું આગળથીજ–કોઇને સવાલ કરવાની તકલીફ ન પડે, તંત્રીને મારી પાસે જવાબ લેવા ન આવવું પડે. અને મને ટપાલ ખર્ચ બચે આમ માનવવયની ઉપાધિ ટાળવા–ધરવા ઇચ્છું છું:—

નશીબ જોગે–સમાજમાં એવા અશ્રદ્ધાળુ, ધર્મદ્રોહી યુવાનો પાકતા જાય છે, જેઓ હરદમ ઘર, શેરી, અને વ્યાખ્યાન પીઠો પરથી કુદી કુદીને પ્રચાર કરે છે કે:–"પશ્ચિમનો શાહીવાદ આપણી આર્થિક, નૈતિક પાયમાલી સર્જે છે, સ્વાતંત્ર્ય યુદ્ધની અહિંસક ભેરી બલિદાન માટે બત્રીશાઓની માગણી કરે છે, દેશની ગરીબી "ટુકડા રોટીને કાજ, વેચે વનિતાઓ લાજ" ની વ્યાપક દશા સર્જતી જાય છે. સંતાનને ખોળે ઝુલાવી સંસ્કાર પાન કરાવતી માતા સંસ્કારહિન હોવા સાથે કચરાતી જાય છે" આ પ્રચારને અતિચાર–વિવેચન ભાખી "રાજ-કથા, ભક્ત કથા, દેશ કથા, સ્ત્રી કથા" ની મનાઇ આજ્ઞા રોકી શકી નથી, જનતા અને આવતી પેઢી આ યુગમંથનમાં તરબતર થતી જાય છે. આ પ્રવાહને વધતો અટકાવવા શ્રીમદ્ આચાર્યદેવે સમાજને તંદુરસ્તી અને વિશુદ્ધિ અર્પતો તિથિચર્ચાનો મહાન પ્રશ્ન ખડો કરી શ્રદ્ધાળુ વર્ગને પાછો જૈન સમાજના જ કામમાં રોકી લેવા સાથે જૈન શાસનની સત્ય ઝંખનાનો સચોટ પુરાવો રજુ કરી વિશ્વને આશ્ચર્યમાં ગરક કર્યું છે.

અને આ તાજેતરના મુંબઈના નવાંગી વાસક્ષેપ પૂજન અને ઘીની બોલી પણ શ્રીમદ્ આચાર્યદેવનું દૃષ્ટા તરીકેનું સાફલ્ય સૂચવે છે. જૈનસમાજમાં સમાજ-દ્રવ્યની મુખ્ય બે વ્યવસ્થા છે. દેવદ્રવ્ય અને સાધારણ દ્રવ્ય. દેવદ્રવ્યનો ઉપયોગ અન્યાર્થે આચાર્યદેવની દૃષ્ટિએ પણ થઇ શકે નહિ. અને સાધારણ દ્રવ્યનો કબજો લઈ તેનો સમાજહિતમાં ખર્ચ કરવા આજનો 'ધર્મદ્રોહી યુવાન' હાકલ પાડી રહ્યો છે. ભાવીના ભણકાર દૃષ્ટાને કાને પહેલા પડે છે. એટલે તેની અગમ રૂપે આવી ઘીની બોલીથી, ગુરૂપૂજનાદિ વિધિઓથી' 'ગુરૂદ્રવ્ય' નામક ત્રીજી સમાજદ્રવ્યની વ્યવસ્થા આજથી વેગવંતી કરવામાં આવે તો એમાં ખોટુંયે શું છે? મુનિરાજોની શબ્દ–મોરલીએ શ્રીમંતો નાચતા અટકી જાય એવો 'ધર્મ-શ્રદ્ધાનો' ઓસરતો કાળ આવે તો એ અણીની પળે આ શ્રીમંતોને ચોપડે એકત્ર થયેલી ગુરૂપૂજનાદિની મુડી શરીરની સાર સંભાળ માટે ખપ લાગી જાય. એટલે વિચાર કરતાં આ પદ્ધતિ મુનિગણને ભવિષ્યમાં આશીર્વાદરૂપ થઈ પડશે એમ દરેકને જરૂર લાગશે. સમાજ પોતાના પૂજ્ય ગુરૂસમૂહનું પૈસાના અભાવે દુ:ખસહન જરૂર નજ ઈચ્છે.

વળી આ ગુરૂપૂજનમાં જૈનશાસનની પ્રભાવના સાથે મૂર્તિપૂજાનો વિકાસ પણ થઇ રહ્યો છે. સાદી અને સાત્વિક વીતરાગ પ્રતિમાને શીરે કેશર, આંગી, સોનાચાંદીના દાગીના, પરદેશી પહેરવેશની નકલ, ફેસનની ઘડિયાળો ક્રમાનુક્રમ

ચડાવાય. સ્વર્ગવાસી અને વિદ્યમાન મુનિરાજોની મુર્તિઓ પ્રતિષ્ઠિત થાય, આથી આગળ વધતાં ખુદ મુનિરાજોનું પોતાનું ઘીની બોલીથી વાસક્ષેપથી તો શું બલ્કે બરાસ, અત્તર મિશ્રિત કેશરથી પૂજન થાય તો પણ સમાજહિતકોએ વાંધો ન લેવો જોઇએ. કારણ કે આ પૂજનથી સમાજને અનેક વિધ લાભ પ્રાપ્ત થાય તેમ છે. થોડાક નોંધુ: (૧) મૂર્તિપૂજાનો વિકાસ (૨) જૈનશાસનની પ્રભાવના (૩) ગુરૂદ્રવ્યની સમયજ્ઞ વ્યવસ્થા. (૪) ગુરૂ માનનો વિસ્તાર. આ પૂજનનો વિરોધ કરનારને શીરે ભવિષ્યનો ઇતિહાસકાર સમાજ પ્રગતિને નુકશાન કરવા બદલ કાળીટીલી ચોંટાડશે.

આચાર્ય શ્રીમદ્નું આ મૂર્તિપૂજા-વિકાસનું છેલ્લું સોપાન નીરખી દિગંબર બંધુઓએ આવા વિકાસની સંભાવના રહે એ અંગે સ્થિતિ ચુસ્ત નહિ રહેતાં મૂર્તિપૂજામાં થોડીક દિશાઓ ખુલ્લી મુકવી જોઇએ અને સ્થાનકવાસી બિરાદરોએ આ પ્રગતિને પોતાના સમાજમાં વાવવા સમાજની અસાધારણ બેઠક બોલાવી મૂર્તિપૂજા માટે સબળ પ્રયત્ન કરવો જોઇએ.

આ વિશદ સરવૈયું નીરખી સમાજના વિચારકોએ શ્રીમદ્ આચાર્યદેવને નિંદવાને બદલે સભાઓ ભરી અભિનંદનપત્રો અર્પવા ઘટે હું તો ગામડાનો જુવાન, આ નાનકડી શબ્દ-પુષ્પોની અંજલી ધરૂં છું.

પાર્શ્વ-પ્રભુ મંગળદીવો

રચયિતા. અમૃતલાલ ઉજમશી. સંઘવી. ગંધાર.

રાગ-અશલ મંગલ દીવાનો (દેપાલ કવી કૃત)

દીવો રે દીવો મંગલ દીવો
પાર્શ્વ પ્રભુનો મંગલ. દીવો.
મંગલ દીવો જે કો ઉતારે.
ભવભવના દુઃખ દોહગ જાવે. દીવો
તિર્થ ગંધારે પાર્શ્વ જીનંદા
કષ્ટ સંકટ સબ દુર કરે વંદા. દીવો.
પાર્શ્વ જીનંદા અમીઝરા શોહે.
મૂખડુ પ્રભુનું ચંદ્રની તોલે. દીવો.
પૂર્ણ શ્રદ્ધાએ મંગળ ગાયે
અમૃતલાલ કહે દુઃખ દૂર જાયે. દીવો.

आचार्यदेवना उपदेशाम्रतथी अनेक संस्थाओनी थयेल उद्घाटन

ले: मा. चंदनमल सागरमल जैन, सादडी.

यहां पर प्राचीन तीर्थोद्धारक बालब्रह्मचारी चारित्र–चूड़ामणि श्रीमज्जैनाचार्य विजय नीतिसूरीश्वरजी म. एवं पन्यासजी म. श्री मनोहरविजयजी म. तथा पन्यासजी म. श्री सम्पतविजयजी म. गणिवर्य आदि ठा. १७ परम सुखशान्तिपूर्वक विराजमान हैं ।

इस वर्ष आपका चातुर्मास यहां होने से शासनकी अच्छी उन्नति हो रही है । धर्म–ध्यान भी अच्छा हो रहा है । व्याख्यान पन्यासजी म. श्री सम्पतविजयजी फरमाते हैं । जनता अच्छी संख्या में व्याख्यान–वाणी का लाभ ले रही है, आपके चतुर्मास से सारे शहर में आनन्द मङ्गल हो रहा है । सब प्रकार से शान्ति हो रही है ।

विशेष यहां पर बहुत वर्षों से कन्याशाळा तथा धार्मिक पाठशाळा में शिक्षण बंद होगया था जब कि इतने बड़े क्षेत्र में इनकी अनिवार्य आवश्यकता थी । यह बात आचार्य-देवको ज्ञात होने से आचार्यदेवने बहुत प्रयत्न किया और विद्या का महत्व बताते हुए समय २ पर व्याख्यानमें भी उपदेश दिया । फलस्वरूप यहां के श्रीसंघने आचार्यदेवके उपदेशानुसार दोनों पाठशालाएं प्रारम्भ करदी हैं । अध्यायिकाएं तथा अध्याधयकों का भी अच्छा प्रबन्ध होगया है और दोनों संस्था सुचारु रूपसे चल रही है यह उपकार आचार्यदेवका ही है अतः हम आचार्यदेवके महान् ऋणी हैं । इस श्रेयके अधिकारी भी आचार्यश्री ही हैं । शासनदेवसे भी यही प्रार्थना है कि ये दोनों संस्थाएं चिरस्थायी बनें । सादड़ी श्री संघसे भी यही निवेदन है कि आपने अपनी उदारतापूर्वक आचार्यदेवकी आज्ञाका पालन किया है अतएव इस शुभ कार्य के लिये आपको धन्यवाद न देकर बधाइ दें तो ऊपासङ्गिक नहीं होगा । जिस उत्साह से आपने इन संस्थाओं का सञ्चालन किया है उसी उत्साह-पूर्वक कार्य सुचारु रूपसे चलाने की उदारता करें ।

विशेष हर्षोत्पादक समाचार यह है कि यहां पर सेवा-समाज की कोइ व्यवस्था नहीं थी जब कि ऐसी संस्थाओं की प्रत्येक ग्राममें अनिवार्य आवश्यकता रहती है तो गोडवाड़ प्रान्तमें तो सादड़ी केन्द्रस्थान गिना जाता है इस लिये यहां इसकी नितान्त आवश्यकता थी । बहुतसे नवयुवकों की इस ओर अभिरुचि भी थी । इस वर्ष भाग्योदय से आचार्य-देवका अमोघ-साधन मिलजाने से बहुत दिनों की इच्छा सफल होने का सौभाग्य भी प्राप्त

हुआ । आचार्यदेवके सदुपदेश से इस कार्य का श्रीगणेश ता. २३-९-४१ को प्रातःकाल हो गया है । इस संस्था का नाम महावीर जैन सेवासमाज रक्खा गया है । संस्था के मुख्य उद्देश्य निम्न हैं—

जैन समाज की सेवा करना, ज्ञान का प्रचार करना, रोगियों की सेवा करना इनके अलावा आवश्यकीय सेवा करने का ही है अतः धर्मप्रेमी सज्जनों से निवेदन है कि इस संस्था की ओर खास ध्यान देकर इस कार्य को उन्नति की ओर बढ़ाते रहें । किंबहुना ?

ઉપધાન ફાલ

अमदावाद.

૧. જૈનાચાર્ય શ્રીમદ વિજયસિદ્ધિસુરિજી (દાદા) અને જૈનાચાર્ય શ્રી વિજયમેઘસુરિજીના સદુપદેશથી સારંગપુર-તળીયાની પોળવાળા શા હઠીસંગ કેવળદાસ તરફથી હઠીભાઈની વાડીમા ૧ આસો સુદિ ૧૦, ૨ આસો સુદિ ૧૪ એમ બન્ને દિવસે નાણુ માંડી પ્રવેશ કરાવતાં નરનારી મળી આસરે બસોના સમુદાયે પ્રવેશ કરેલ છે.

૨. અનુયોગાચાર્ય પન્યાસ શ્રી મોહનવિજયજીના શિષ્ય પન્યાસ શ્રી શાન્તિવિજયજી આદિ મુનિવર્યની અમોઘ દેશનાથી પ્રતિબોધી વહેલારવાળા શા વાડીલાલ છગનલાલ, અને શા લાલભાઈ ભોગીલાલ કુસુમગરવાળા તરફથી ભગુભાઈના વંડામાં ૧ આસો સુદિ ૧૦, ૨ આસો સુદિ ૧૪ એમ બન્ને દિને નાણુ માંડી પ્રવેશ કરાવતાં પુરૂષ અને કુમારિકાસહનારી સમુદાય મળી ૧૨૫ ના સમુદાયે પ્રવેશ કરેલ છે.

पालिताणा.

૩. જૈનાચાર્ય શ્રીમદ સાગરાનંદસુરિજીના ઉપદેશામૃતથી અમદાવાદવાળા શા ગુલાબચંદ નગીનદાસ આદિ તરફથી ખુશાલ ભૂવનમાં ૧ આસો સુદિ ૧૦, ૨ આસો સુદિ ૧૪ એમ બન્ને દિન નાણુ માંડી પ્રવેશ કરાવાશે.

૪. જૈનાચાર્ય શ્રી વિજયભક્તિસુરિજીના નેત્રત્વપણા નીચે અમદાવાદ શાહપુરવાળા શા. ડાહ્યાભાઇ સાકળચંદ તરફથી ૧ આસો સુદિ ૧૦, ૨ આસો સુદિ ૧૪ એમ બે મૂહુર્તોએ મોતી-સુખિયાની ધર્મશાળામાં નાણુ મંડાવી પ્રવેશ કરાવાશે.

૫. અનુયોગાચાર્ય પંન્યાસ શ્રી ધર્મવિજયજીના શિષ્ય પંન્યાસ શ્રી સુરેન્દ્રવિજયજી આદિ મુનિ મંડળની છત્રછાયા નીચે કંકુબાઈની ધર્મશાળામાં પાડીવવાળા તરફથી ૧ આસો સુદિ ૧૦, ૨ આસો સુદિ ૧૪ એમ બન્ને પ્રસંગે નાણુ માંડી પ્રવેશ કરાવાશે.

૬. **कपडवंज** જૈનાચાર્ય શ્રી વિજયઉમંગસુરિજીના આધિપત્યપણા નીચે અમદાવાદવાળા પરી શકરાભાઇ લલુભાઈ મનોરદાસ તરફથી શાન્તિનાથની પોળમાં પંચના ઉપાશ્રયે ૧ આસો સુદિ ૧૦, ૨ આસો સુદિ ૧૨ એમ બન્ને સમયે નાણુ મંડાવી પ્રવેશ કરાવશે.

૭. **बीयावर** જૈનાચાર્ય **શ્રીમદ વિજયનીતિસુરીશ્વરજી** મહારાજના ગુરૂ બંધુ ઉપાધ્યાય **શ્રી દયાવિજયજી**ના ઉપદેશસિંચનથી **શેઠ શંકરલાલ મૂણોત** તરફથી આસો સુદિ ૧૦, અને આસો સુદિ ૧૪ એમ બન્ને મૂહુર્તોએ નાણુ મંડાવી પ્રવેશ કરાવશે.

૮. **जयपुरसीटी** ઉપાધ્યાય શ્રી મણીસાગરજીની આગેવાની નીચે જવેરી મોંગીલાલ ગોલેચ્છા તરફથી ૧ આસો સુદિ ૧૩, ૨ આસો વદિ ૧ એમ બન્ને અવસરે નાણુ માંડી પ્રવેશ કરાવશે.

૯. **सीवनी (यु. पी.)** ઉપાધ્યાય શ્રી સુખસાગરજીના છત્ર નીચે બોટાદવાળા મણીલાલ પોપટલાલ, જબલપુરવાળા બ્હેન તારાબાઇ, બ્હેન સુરજબાઇ અને કલકત્તાવાળા બ્હેન પાનબાઇ તરફથી ૧ આસો સુદિ ૧૫, ૨ આસો વદિ ૨ ના મૂહુર્તો એ નાણુ માંડી પ્રવેશ કરાવશે.

૧૦. **जामनगर** જૈનાચાર્ય શ્રીમદ વિજયનીતિસુરિજી મહારાજના પ્રશિષ્ય પંન્યાસ શ્રી માનવિજયજીના ઉપદેશથી વોરા ઉમેદચંદ કાળીદાસ લવજી તરફથી વીશા શ્રીમાળી તપગચ્છ પાઠશાળામાં ૧ આસો સુદિ ૧૪, ૨ આસો વદિ ૨ એમ બન્ને મૂહુર્તો એ નાણુ મંડાવી પ્રવેશ કરાવશે.

૧૧. **बालापुर** પંન્યાસ શ્રી ચંદ્રવિજયજીના અધ્યક્ષપણા નીચે શેઠ લાલચંદ ખુશાલચંદ તરફથી ૧ આસો સુદિ ૧૦, ૨ આસો સુદિ ૧૪ એમ બન્ને દિવસે નાણુ માંડી પ્રવેશ કરાવશે.

૧૨. **शाहपुर (थाणा)** પંન્યાસ શ્રી ધર્મવિજયજીના પ્રાધાન્યપણા નીચે બ્હેન સોનબાઇ તથા બ્હેન મોતીબાઇ તરફથી ૧ આસો સુદિ ૧૩, ૨ આસો વદિ ૨ એમ બે દિને નાણુ માંડી પ્રવેશ કરાવશે.

૧૩. **अमलनेर (खानदेश)** પંન્યાસ શ્રી ભૂવનવિજયજીની છાયા નીચે ગંગાસ્વરૂપ બ્હેન સીતાબાઈ, અં. સૌ. માનકોરબાઈ, કચ્છી દશાઓશવાલ સંઘ શેઠ નટવરલાલ, શેઠ રીખવદાસ, શેઠ હજારીમલ, આદિ તરફથી ૧ આસો સુદિ ૧૩, ૨ આસો સુદિ ૧૫ એમ બન્ને દિને નાણુ મંડાવી પ્રવેશ કરાવશે.

૧૪. **बीकानेर** જૈનાચાર્ય શ્રી વિજયલબ્ધિસુરીજીના વચનામૃતના ઉપદેશથી રાંગડી ચોક, જૈન પાઠશાળામાં શા. બહાદરમલ અભયરાજ કોચર તરફથી ૧ આસો સુદિ ૧૪, ૨ આસો વદી ૩ એમ બે દિને નાણુ માંડી પ્રવેશ કરાવશે.

૧૫. **इन्दोर** મુનિશ્રી ધર્મસાગરજીના ઉપદેશથી પીપલી બજારના જૈન ઉપાશ્રયે શ્રી જૈન શ્વેતાંબર મૂર્તિપૂજક સંઘ તરફથી ૧ આસો સુદી ૧૪, ૨ આસો વદી ૨ એમ બે મુહુર્તો એ નાણુ માંડી પ્રવેશ કરાવશે.

વર્તમાન-સમાચાર

તખતગઢ જૈનાચાર્ય શ્રીવિજયહર્ષસૂરિજીના ઉપદેશ સિંચનથી પર્યુષણા પર્વમાં તપારાધના ઘણાજ ઉત્સાહપૂર્વક મોટા પ્રમાણમાં થવા સાથે આયંબિલ ખાતુ કાયમ માટે સ્થાપી, તેનું નિભાવ ફંડ આસરે રૂ. ૮૦૦૦)નુ થવા ઉપરાંત ચાતુર્માસના ચારે માસ માટે વ્યાખ્યાનની પ્રભાવના અને રૂપીઆ શ્રીફળ સાથે ગહુળી કરવાનુ લોકોએ ઉત્સાહથી નોંધાવી દીધેલ હોવાથી, દરરોજ નિયમીત તેમ થયા કરે છે, વળી જુદાજુદા ખાતાઓમાં દેશાવર મદદ મોકલવા માટે પણ હજારેક રૂપીઆની ટીપ કરી, આચાર્ય મહારાજની આજ્ઞા મુજબ તેની વ્યવસ્થા કરાયેલ છે.

બીયાવર ઉપાધ્યાયજી શ્રીદયાવિજયજી, મુનિશ્રી ચરણુવિજયજી, મુનિશ્રી મલયવિજયજી આદિના ઉપદેશથી ઘણુાજ આડંબરપૂર્વક અક્ષયનીધિ તપનો પ્રારંભ કરી, બહુજ ઠાઠમાઠથી તેની ઉજવણી સમુદાય તરફથી કરાવવામાં આવેલ, ઉપરાંત ઉપધાન-તપની પણ આરાધના શરૂ થયેલ છે. હરેક ધાર્મિક કાર્યોની ઉજવણી અને આરાધનામાં, સમુદાય સાથે અગ્રણીય ભાગ તન મન અને ધનથી અત્રેના યુવાન શ્રેષ્ટી શંકરલાલ મૂણોત ઘણાજ ઉત્સાહથી લઈ રહ્યા છે.

પ્રતાપગઢ પન્યાસજી શ્રીકલ્યાણુવિજયજી મહારાજની પ્રખર દેશનાથી પ્રતિબોધિત, ચાતુર્માસ અને પર્યુષણા પર્વમાં અનેક ભવ્યાત્માઓએ જુદા જુદા પ્રકારની તપા-રાધના કરવા, ઉપરાંત કલ્પસૂત્ર અને પારણાની પોતાના ઘેર પધરામણી કરાવી ઘણાજ આડંબર અને ભભકાપૂર્વક વરઘોડા અને રાત્રી જાગરણો તેમજ પ્રભાવનાઓ કરી જૈનશાશનની ઉજવળ યશકીર્તિમાં વધારો કર્યો હતો. વળી શ્રીમદ વિજયહીરસૂરીશ્વરજી મહારાજ અને અનુયોગાચાર્ય પંન્યાસપ્રવર શ્રીમદભાવવિજયજી ગણિવર્ય આદિની જયંતિઓ પણ જાહેર સભા, આંગી પૂજા, રાત્રીના જાગરણુ આદિ ઉત્સવોથી ઉજવવામાં આવી હતી. ઉપરાંત જુદાજુદા પ્રસંગોએ જાહેર સભાઓ જુદાજુદા સ્થળે ભરવામાં આવતી, જેમાં હરેક ધર્મના સર્જનો ઉપરાંત રાજ્ય કર્મચારી આદિ મંડળો મ્હોટા સમૂહમાં હાજરી આપતાં. અને તેવી હરેક સભા પંન્યાસજી મહારાજ, મુનિ ચરણુવિજયજી અને કુશળવિજયજી આદિના વકતવ્યથી ઘણીજ આલ્હાદ પામતી હતી. નિયમિત વ્યાખ્યાનમાં પણ દિવાન સાહેબ આદિ કર્મચારીઓ સાથે નગરજનોની સારી હાજરી હોય છે. પંન્યાસજી મહારાજના આવાગમનથી જૈનજૈનેતર હરેકમાં વ્યાખ્યાન શ્રવણનો વેગ ખૂબ ખૂબ વધ્યો છે.

कुवारिया (मेवाड) સ્થાનકવાસી સંપ્રદાયના મેવાડના સિંહ સમાન પૂજ્ય જોધરાજજી મહારાજ, છ માસની લકવાની બીમારી ભોગવી, બે દિવસનુ અણુસણુ કરી આસો સુદિ ૫ ના સહવારના સાત વાગે સ્વર્ગવાસ થયેલ હોવાથી આજુ-બાજુના તેઓના મેવાડી ભક્તો અનેક પ્રમાણુમાં અંતિમ ક્રિયામાં ભાગ લેવા ઉભરાતા સાતેક હજારનો સમુહ એકત્ર થવા, ઉપરાંત હજારો રૂપીઆનુ દાન વિધિ થવા સાથે નિશાન ડંકા, બેન્ડ વાજા, કોતલઘોડા, ઉંટીડંકો આદિ ઘણાજ આડંબર સાથે આસો સુદિ ૬ ના બે વાગે અગ્ની સંસ્કાર વિધિ કરવામાં આવી હતી. સદગતના નિમીત્તે અનેક સજ્જનોએ તપા-રાધના અને સામાયિકાદિના વ્રતો લીધેલ છે. સદગતના સમુદાયમાં યુવાચાર્ય મોંગીલાલજી મહારાજ આદિ ત્રણુ સંતો હાલ છે.

બહાર પડી ચૂકેલ છે.

શબ્દરત્નમહોદધિ શબ્દકોષ ભાગ ૨ જો.

સંગ્રાહક, પન્યાસજી શ્રીમુકિતવિજયજી.

સંસ્કૃત ભાષા સરળ રીતે બાળજીવો સમજી દરેક જૈન અજૈન ગ્રંથોનું વાસ્તવિક અર્થ સ્વરૂપ સમજી શકે, તેવી પદ્ધતિએ જૈનાચાર્ય શ્રીવિજયનીતિ સુરીશ્વરજી મહારાજની કોષ બનાવી, તેનું પ્રકાશન કરાવી, જનતાને તેનો લાભ લેતા કરવાની મહેચ્છા હતી, તે બાર વર્ષની મહેનતે આજે પરિપૂર્ણ થવા પામેલ છે.

આવા અલભ્ય કોષના બે ભાગો, ક્રાઉન આઠ પેજી એકંદર ૧૮૦૦ પૃષ્ઠના, ગુરૂવર્યોના શોભિત ફોટાઓ અને પાકા પુંઠાં સાથેના આ ગ્રંથના પહેલા ભાગના રૂા. ૮-૦-૦, અને બીજા ભાગના રૂા. ૧૦-૦-૦ પોસ્ટેજ જુદું રાખવામાં આવેલ છે.

પહેલો ભાગ મેળવનારાએ બીજો ભાગ માગશર માસમાં બાઈંડીંગ થઇ જવાથી મંગાવી લેવા ધ્યાનમાં રાખવું.

જથાબંધ લેનારને યોગ્ય કમીશન આપવામાં આવશે.

લખો.—**શ્રીવિજયનીતિસુરિજી જૈન લાયબ્રેરી,**

૫૬/૧ ગાંધીરોડ, અમદાવાદ

મુદ્રકઃ-**હીરાલાલ દેવચંદ શાહ.** "શારદા મુદ્રણાલય." જુમામસ્જીદ સામે-**અમદાવાદ**
પ્રકાશકઃ-**ભોગીલાલ સાંકળચંદ શેઠ.** **"જૈનધર્મ વિકાસ"** ઓફિસ જૈનાચાર્યશ્રી વિજયનીતિસૂરીશ્વરજી વાંચનાલય. ૫૬/૧ ગાંધીરોડ-**અમદાવાદ.**

વાંચકોને ?

માસિકના નમુનાનો અંક આપને મોકલવામાં આવે છે. આપશ્રીને અવલોકન કરતાં જો એ સંતોષ આપવામાં સફળ નીવડે તો આશા છે કે, વાર્ષિક લવાજમ સ્થાનિકના રૂા. ૨-૦-૦ અને બહારગામના (પોસ્ટેજ સાથે) રૂા. ૨-૬-૦ મોકલી આપશ્રી માસિકના ગ્રાહક તરીકે નામ નોંધાવશો.

લવાજમ મોડામાં મોડા આવતી સુદિ ૧ સુધી મોકલી આપશો. કે જેથી વી. પી. થી મોકલતાં વધુ ખર્ચ ન થાય, છતાં જણાવશો તો વી. પી. કરવામાં આવશે.

ગામ પરગામ વિચરતા પૂજ્ય મુનિવરો માસિકનો પ્રચાર કરી, નવા વાંચન-રસિક ગ્રાહકો નોંધાવી, માસિકને પ્રોત્સાહન આપશે, એવી અમે આશા રાખીએ છીએ.

કોઇ પણ સામાજીક સંસ્થાઓ કે પૂજ્ય મુનિગણુને અમો, મફત કે ઓછા દરથી માસિક આપી શકીએ તેમ નથી, એ સૂચન થાય.

નમુનાની નકલ મંગાવવાથી મોકલી આપવામાં આવશે. "તંત્રી"

ગ્રાહકોને ખાસ લાભ

દર માસની સુદિ પંચમીએ નિયમિત પૃ. ૩૨ નું વાંચન. વાર્ષિક લવાજમ સ્થાનિકના રૂા. ૨-૦-૦ અને બહારગામના રૂા. ૨-૬-૦ (પોસ્ટેજ સાથે)થી પુરૂ પાડવા, ઉપરાંત આકર્ષક પુસ્તકો ભેટ આપવામાં આવશે.

માસિકના નવા થનાર ગ્રાહકને લવાજમ મોકલી આપવાથી (૧) આચાર્યશ્રી-વિજયનીતિસૂરીશ્વરજી મહારાજનું જીવન ચરિત્ર (સંસ્કૃત) ક્રાઉન સોળ પેજી, પાકુ પુંઠું પૃ. ૪૭૬ અગર પ્રશ્નોત્તર રત્નમાળા (હીંદિ-ગુજરાતી) ક્રાઉન સોળ પેજી, પૃ. ૧૯૦ એ બેમાંથી જે કોઇ એકની પસંદગી કરી ગ્રાહક જણાવશે તે, ઉપરાંત શ્રીયશોવિજય જૈન પુસ્તકાલય. રાધનપુર તરફથી, (૨) રથયાત્રા મહોત્સવ. (૩) ચોવીસ જીનકલ્યાણુક, (૪) સ્તવનાવલી, મળી એકંદર ચાર પુસ્તકો ભેટ આપવામાં આવશે.

"તંત્રી"

તપાગચ્છ પટ્ટાવલી

સાહિત્યરસિક જનતાને ખાસ તક

ઉપાધ્યાય શ્રીમદ્ ધર્મસાગરજી વિરચિત—

તપાગચ્છ પટ્ટાવલી:—સંપાદક, પં૦ શ્રી કલ્યાણવિજયજી મહારાજ. છપાઇને તૈયાર થઇ પ્રસિદ્ધ થઈ ચુકેલ છે, આ ગ્રંથમાં પ્રભુશ્રી મહાવીરદેવની પાટપરંપરાએ થયેલા આચાર્યાદિ સાથે શાસનપ્રસિદ્ધ અન્ય મહાપુરૂષોનું ઐતિહાસિક દ્રષ્ટીએ ઉપયોગી સાહિત્ય આપવામાં આવ્યું છે.

ક્રાઉન આઠ પેજી ૩૫૦ પૃષ્ઠના, શોભિત ફોટાઓ, અને પાકુ પુંઠું (જેકેટ) સાથેના આ ગ્રંથનું મુલ્ય માત્ર રૂા. ૧-૮-૦. પોસ્ટેજ જુદું

લખો—**જૈન ધર્મ વિકાસ ઓફિસ**, ૫૬૧ ગાંધી રોડ, **અમદાવાદ.**

જાહેર ખબર આપનારાઓને

જૈન સમાજને ગામડે ગામડે આ નવા માસિકનો પ્રચાર થશે, અને એથી જાહેર ખબર આપનારાઓ પોતાના પ્રચારનો સંદેશ દૂર દૂર પહોંચાડી શકશે.

માસિક નિયમિત પ્રગટ થતુ હોવાથી જાહેર ખબર આપનારાઓને આ તકનો લાભ લેવા આમંત્રણ આપીએ છીએ, ભાવ નીચે મુજબ.

પૃષ્ઠ	બારમાસ	નવમાસ	છમાસ	ત્રણમાસ	એકમાસ
૧	૪૦	૩૨	૨૪	૧૪	૬
ના	૨૫	૨૦	૧૫	૯	૪
ાા	૧૫	૧૨ાા	૧૦	૭ાા	૨ાા

એક વખત ટુંકી જાહેરાતના કોલમની બે લાઈન યા તેના ભાગનો રૂા. ૧)

અંક સાથે છપાવેલ તૈયાર હેન્ડબીલની માત્ર વહેંચામણીના એક વખતના રૂા. ૧૫)

અંક સાથે છપાવેલા તૈયાર દરેક તોલા અઢી યા તે વજનના કોઇ પણ ભાગના સૂચિપત્રની માત્ર વહેંચામણીના એક વખતના રૂા. ૩૦)

સરતો-(૧) નાણા અગાઉથી લેવામાં આવશે. (૨) જાહેર ખબર લેવી યા ન લેવી એ તંત્રીની મરજી ઉપર રહેશે. (૩) જાહેરાત પાછી મોકલાશે નહિ.

વધુ ખુલાસા માટે પત્રવ્યવહાર યા પુછપરછ નીચેના શરનામે કરો.

"જૈન ધર્મ વિકાસ" ઓફિસ ૫૬/૧ ગાંધીરોડ, અમદાવાદ.

ફક્ત સાધુ સાધ્વીઓ માટેજ

મનીઓરડરથી વાર્ષિક લવાજમના રૂા. ૩-૦-૦ મોકલી થનારા ગ્રાહકોને, નીચેના ચાર પુસ્તકો ઉપરાંત લવારની પોળવાળા **પોપટ બ્હેન** તરફથી "તપાગચ્છ પટ્ટાવળી" ક્રાઉન આઠ પેજી ફુંપુઠું (જેકેટ સાથે) પૃષ્ઠ ૩૫૦નું ભેટ મોકલવામાં આવશે. વી.પી. થશે નહિ. **'તંત્રી'**

ભેટ ! જૈનતત્ત્વસારગ્રંથટીકા ભેટ ! !

આ ગ્રંથ શ્રી વર્ધમાન સત્ય નીતિ હર્ષસૂરિ ગ્રંથમાલા તરફથી પ્રકાશિત થએલ છે. સંસ્કૃતના અભ્યાસી સાધુ સાધ્વી તથા જૈન ભંડારોને ભેટ આપવાનો છે. મંગાવનારે નીચેના સરનામે પત્ર લખવો:—

૧ **શેઠ રતીલાલ વાડીલાલ**
ઠે. સેન્ડ્રહર્ષ્ટ રોડ, બનજી નિવાસ,
મુ. **મુંબાઈ.**

૨ **શેઠ કાન્તિલાલ ઇશ્વરલાલ**
ઠે. મરીન ડ્રાઇવ, ઇશ્વર નિવાસ,
પ્લોટ નં. ૭૩, મુ. **મુંબાઈ.**

૩ **શેઠ વરધીલાલ કચરાભાઇ**
ઠે. ભાલની પોળ, મુ. **રાધનપુર.**

૪ **શેઠ કકલભાઈ નીહાલચંદ**
ઠે. ભણસાલી શેરી, મુ. **રાધનપુર.**

૫ **વીશાશ્રીમાલી તપગચ્છ જૈન સંઘ**
ઠે. મોહનવિજયજી જૈન પાઠશાલા, મુ. **જામનગર.**

તા. ક.—જામનગરથી પુસ્તક મંગાવનારે પ્રતદીઠ પોસ્ટ ખર્ચને માટે આઠ આનાની પોસ્ટની ટીકીટો મોકલવી.

ટાઇટલ છાપનાર : શારદા મુદ્રણાલય, પાનકોર નાકા, જુમામસીદ સામે—અમદાવાદ